(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 51, अंक 6, दिसम्बर, 2015,
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

नई दिल्ली- इंडिया गेट पर आयोजित विश्व शान्ति हेतु सामूहिक राजयोग कार्यक्रम में मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, अन्तर्राष्ट्रीय भजन सुख सेवा मिशन के संस्थापक स्वामी सर्वानन्द सरस्वती, स्तम्भ लेखक भ्राता फिरोज बख्त अहमद, बहाई समुदाय के राष्ट्रीय संयोजक डॉ.ए.के.मर्चेन्ट, जैन मुनि विवेक, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य। सभा में उपस्थित भारत तथा विदेश के 50 हजार से भी अधिक ब्र.कु.भाई-बहनें।

1. दिल्ली - कांग्रेस पार्टी अध्यक्षा बहन सोनिया गांधी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुरेन्द्र भाई, ब्र.कु.भावना बहन तथा ब्र.कु.ख्याति बहन। **2.कोयम्बटूर**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए जी.आर.डी.इन्स्टीट्यूशन्स की निदेशिका बहन गीता पद्मनाभन, ब्र.कु.कल्पना बहन, ब्र.कु.राजेश्वरी बहन, ब्र.कु.शिवानी बहन तथा ब्र.कु.बीना बहन। **3. दिल्ली**- ज्ञान-विज्ञान भवन में डेरावाल नगर की ओर से आयोजित 'बेटी बचाओ, सशक्त बनाओ' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.डॉ.एम.डी.गुप्ता, ब्र.कु.चक्रधारी बहन, ब्र.कु.शुक्ला बहन, 'पंजाब केसरी' की निदेशिका बहन किरण चोपड़ा, उत्तरी दिल्ली नगरपालिका की उप-मेयर बहन नीलम गोयल तथा अन्य। **4. दिल्ली (दिलशाद गार्डन)**- दिल्ली विधान सभा अध्यक्ष भ्राता रामनिवास गोयल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.इन्द्रा बहन। **5. बारीपदा** - झारखण्ड की राज्यपाल बहन द्रौपदी मुर्मू को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. उमा बहन।**6. जालोर**- किसान सशक्तिकरण अभियान का उद्घाटन करते हुए विधायक तथा राजस्थान किसान मोर्चा अध्यक्ष भ्राता कैलाश सिंह चौधरी, जालोर के कृषि विभाग के सहायक निदेशक भ्राता फूलाराम मेघवाल, महन्त श्री 1008 रणछोड़ भारती, आहोर के विधायक भ्राता शंकर सिंह राजपुरोहित, ब्र.कु.रंजू बहन, ब्र.कु.उर्मिला बहन तथा अन्य। **7. भिलाई नगर**- चैतन्य देवियों की झांकी के उद्घाटन के पश्चात् समूह चित्र में छ.ग.के केबिनेट मंत्री भ्राता प्रेम प्रकाश पांडे, ब्र.कु.आशा बहन, पूर्व संसदीय सचिव भ्राता विजय बघेल तथा अन्य। **8.मऊ** - उत्तर प्रदेश के कारागार मंत्री भ्राता बलराम यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विमला बहन।

संजय की कलम से

इन्द्रियजीत

निज आत्मा के अव्यक्त स्वरूप में स्थिर होकर हर एक कर्मेन्द्रिय को जीतना ही ज्ञानी का पहला पुरुषार्थ है क्योंकि इस विजय से ही गँवाया हुआ सुख का स्वराज्य मिलता है। पुरुषार्थ के शुरू में कर्मेन्द्रियों को जिन भोगों का अभ्यास पड़ा हुआ है वो विषय अपनी ओर खींचेंगे अवश्य। कर्मेन्द्रियों के विषय मनुष्य के मन को तभी तक खींच सकते हैं जब तक कि मनुष्य को स्वरूप-स्थिति के आनन्द की टेव नहीं पड़ी है इसलिए अब जबकि इन्द्रिय-जय के साधन से विकर्माजीत की सिद्धि को पाना है तो आत्म स्वरूप के शुद्ध लक्ष्य से कभी भी हटना नहीं चाहिए। विकर्माजीत देवताओं की हर एक कर्मेन्द्रिय की उपमा 'कमल पुष्प' से की गई है।

देह-भान में आकर कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करने से ही तो कर्म 'विकर्म' बनते हैं। इन विकर्मों के हिसाब को चुकाने के लिए ही जन्म-जन्मान्तर आत्मा को गर्भजेल भोगनी पड़ती है और अनेक दुखमय जीवन पाने पड़ते हैं। तो अब दुखों के बन्धन से छूटने के लिए कर्मेन्द्रियों की गुलामी से आजाद होना जरूरी है। कर्मेन्द्रियों के भोगों से तो कभी कोई तृप्त नहीं हुआ है। तुष्टि तो निज रस से ही हो सकती है। अत: भाग्यशाली वह है जो कर्मेन्द्रियों के वश न होकर कर्मेन्द्रियों को वश किए हुए है। परन्तु इनको वश करना सम्भव तभी है जब कोई 'मन्मनाभव' के (मन को परमात्मा की स्मृति में टिकाना) 'वशीकरण मन्त्र' में स्थित है।

हठ से अथवा बाह्य साधनों से कर्मेन्द्रियों को वश करने के लिए अनेक साधु, सन्त, महात्मा इत्यादि अनेक प्रकार की कठिन तपस्या और साधनायें करते आये हैं परन्तु वे मनसा-सहित देह और देह की कर्मेन्द्रियों को पूर्ण रीति जीत न सके क्योंकि यह सहज युक्ति तो केवल देह रहित परमात्मा ही सिखाते हैं। देखो, कर्मेन्द्रियों को जीतने का पुरुषार्थ कोई स्थूल परिश्रम नहीं है क्योंकि कर्मेन्द्रियों को चलायमान करने वाली है प्रबल 'माया' अर्थात् मानसिक विकल्प और विकल्पों को जिताने वाला है ही ईश्वरीय ज्ञान और ईश्वरीय ज्ञान है ही ज्ञान स्वरूप ईश्वर में। इसलिए अब परमात्मा शिव द्वारा आत्मा के शुद्ध स्वरूप को जानकर और परमपिता परमात्मा को पहचान कर आनन्द में रमण करते रहना चाहिए। इस अव्यक्त बल से इन्द्रियों को जीत कर अव्यक्त आनन्द में हरदम रमे रहना चाहिए। ❖

अमृत सूची

- आसक्ति से आज़ादी की ओर (सम्पादकीय) 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .6
- अलौकिक दौलत..............8
- विचारों का तूफान हुआ शांत ..9
- अच्छा करें, अच्छा पायें......10
- ईश्वरीय कारोबार में..........11
- मानव जीवन में धन 14
- उदारता - सात्विक 17
- 'पत्र' संपादक के नाम 18
- मैं खुशनसीब हूँ बाबा.........19
- कर्म सिद्धांत..................21
- बाबा की मेहरबानी से........22
- आवश्यकता है 22
- बाबा ने बनाया जुआरी से 23
- भगवान ऊपर से नीचे 24
- मिट गई गले की समस्या 25
- सादगी और शालीनता 26
- निराशा हटाओ, खुशी 27
- जिज्ञासा को मिली संतुष्टि 28
- बाबा ने संवार दी ज़िन्दगी 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- स्थायी सुख-शान्ति...........32
- दृढ़ संकल्प के साथ..........33
- आत्म-स्वरूप की सतत 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

आसक्ति से आज़ादी की ओर

मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसके 5 पुत्र हैं। एक दिन बहुत परेशान नजर आए। पूछा तो कहने लगे, कार्य की अधिकता है, अपने लिए समय नहीं बचता, खर्च भी अधिक है, आवश्यकता पूर्ण नहीं कर पाता हूँ। फिर कहने लगे, एक लड़के ने मोबाइल मांगा, सारा दिन कान से लगाए रखता है। दूसरे ने कमरे को सजाने के साधन मांगे, सारा दिन कमरे में पड़ा रहता है, तीसरे को मिठाई अच्छा लगती है, उसकी मांग करता रहता है। चौथे को मुलायम सोफा, बिस्तर, तकिया चाहिए, उन पर आराम फरमाता है और पाँचवाँ इत्र का शौकीन है, मैं तो खर्च कर-कर के खाली हो गया हूँ।

इन्द्रियों रूपी पुत्र

ध्यान दीजिए, ये पाँच पुत्र हम सबके हैं, ये हैं पाँच इन्द्रियाँ जो अपने-अपने विषय की चीज़ों की माँग निरन्तर करती रहती हैं और इन माँगों की पूर्ति में लगी आत्मा नित्य हताशा, निराशा, थकान और भारीपन महसूस करती है। मानव जीवन प्रकृति और पुरुष का खेल है। आत्मा पुरुष है, रचयिता है, धारक है, उसने अपने संस्कारों प्रमाण शरीर को रचा है और धारण किया है। शरीर को साधन के रूप में अपनाकर वह सृष्टि पर अपना खेल करता है। यह खेल आनन्द के लिए है परन्तु इसमें बाधा उत्पन्न करती हैं इन्द्रियाँ। ये इन्द्रियाँ संसार की चीज़ों को देखना, सूंघना, स्पर्श करना, सुनना, खाना चाहती हैं और इन माँगों को पूरा करने में लगी आत्मा को अपने को देखने और संवारने की फुर्सत ही नहीं मिलती, यही परेशानी का कारण है।

आसक्ति बनाती है पराधीन

विचार करें, क्या मानव जीवन का उद्देश्य मात्र इन्द्रियों की तुष्टि करते जाना है। इन्द्रियाँ तो कभी तुष्ट होती ही नहीं, यह तो आग को घी से बुझाने की चेष्टा है। तुष्टि के

प्रयास में भोग की आग को अधिक भड़कने का मौका मिलता है।

संसार में विचरण करते हुए, इन्द्रियों को अपने-अपने विषय – रूप, रंग, गंध, स्पर्श, वाद्य, खाद्य के प्रति पहले आकर्षण पैदा होता है जो बाद में अनुराग में बदल जाता है। अनुराग से राग उत्पन्न होता है। राग ही आसक्ति है जो आत्मा को पराधीन बना देती है। ऐसी पराधीन आत्मा को वह प्रिय लगने वाली वस्तु या व्यक्ति जब तक न दिखे तब तक चैन नहीं आता। जितनी आसक्ति होगी उतनी ही बेचैनी ज्यादा होगी।

सेविका के पीछे भागना शोभा नहीं देता

जो बेचैनी से बचना चाहता है उसे आसक्ति छोड़नी पड़ेगी। इच्छाएँ या आसक्ति क्यों उठती हैं? इसलिए कि मन अभी प्राप्तियों से खाली है। तृप्त करने वाले साध्य से दूर है इसलिए जड़ शरीरों और जड़ पदार्थों के रूप, रंग पर मोहित है परन्तु आत्मा को यह विचार करना चाहिए कि इन जड़ पदार्थों में अपनी तो कोई चेतना या भाव है नहीं, इन्हें बनाने वाला तो कोई चेतन है। इसलिए प्रेम भी उस चेतन रचयिता से ही होना चाहिए जिसकी ये रचना हैं। जैसे राजा का बच्चा अपने पिता से बिछुड़कर निर्धनों से भी भीख मांगने लगता है, वही स्थिति आज आत्मा की है। वह स्वयं

शान्त स्वरूप है पर स्वयं को भूलकर पदार्थों और शरीरों में शान्ति खोजती है। स्वयं आनन्द स्वरूप होते भी जड़ चीज़ों में आनन्द खोजती है। स्वयं प्रेम स्वरूप होते भी पदार्थों से प्रेम चाहती है। वास्तव में प्रकृति हमारी सेविका है, यह शोभा नहीं देता कि हम उसके पीछे भागें।

बुद्धि का निर्णय पहले, इन्द्रियों की क्रिया बाद में

यदि इन्द्रियाँ किसी वस्तु के पीछे आतुर होती हैं तो यह निर्णय करना कि किसे लेना है और किसे नहीं, यह बुद्धि का काम है। मान लीजिए, किसी के सामने खाने के लिए आम रखे गए। अब यह निर्णय करना कि आम अच्छे हैं या खराब, खट्टे हैं या मीठे, खाने हैं या नहीं, अब खाने हैं या बाद में, यह तो बुद्धि का काम है। मन का काम केवल सूचना देना है कि आम रखे हैं और बुद्धि द्वारा निर्णय होने के बाद इन्द्रियों का काम है उन्हें खाना। यदि बुद्धि रूपी मालिक की आज्ञा के बिना ही मन रूपी नौकर और कर्मेन्द्रिय रूपी चाकर आमों पर टूट पड़ते हैं तो यह तो बुद्धि की अवमानना है, उपेक्षा है अथवा कहें कि बुद्धि कमज़ोर है। इन्द्रियाँ और मन जिस पर आसक्त हैं, उसके पीछे भागते हैं और बुद्धि में यह बल नहीं कि उन्हें रोक सके।

इसी प्रकार, देखने का उदाहरण ले सकते हैं। मन ने सूचना दी कि टी.वी.में अमुक कार्यक्रम आ रहा है। अब वह कार्यक्रम देखना है या नहीं, कितनी देर देखना है, यह निर्णय लेना बुद्धि का काम है। निर्णय होने के बाद आँखों का काम है बुद्धि के कहे अनुसार देखना। यदि बुद्धि निर्णय लेने में समर्थ ही नहीं या उसके निर्णय में वो दम नहीं कि मन और इन्द्रियाँ उसकी परवाह करें तो बिना अंकुश देखने की प्रक्रिया चलेगी। आँखें जिन दृश्यों पर आसक्त हैं उनके पीछे लगी रहेंगी और परिणाम में समय, स्वास्थ्य, चरित्र, एकाग्रता आदि का नाश अवश्यंभावी है। ऐसी स्थितियों से बचने के लिए बुद्धि को शक्तिशाली बनाने की आवश्यकता है जिसका अर्थ है कि उसके पास ऐसी युक्तियों का भण्डार हो जिनसे वह मन को समझाकर अपनी बात मनवा सके।

आत्मा और परमात्मा का चिन्तन

मन रूपी बच्चे को आनन्ददायी खिलौना चाहिए। आसक्ति रूपी अल्पकाल की खुशी देने वाले खिलौने की जगह उसे स्थाई आनन्ददायी प्रभु-समृति रूपी खिलौना दे दिया जाए तो वह पुराने वाले घटिया खिलौने को स्वत: छोड़ देगा। समाधान यही है कि मन तथा बुद्धि को सांसारिक व्यक्ति, वस्तु, वैभव, विषयों आदि से निकालकर आत्मा और परमात्मा के चिन्तन में लगाया जाए।

दोष, दुर्गुणों का सफाया

मन और बुद्धि को आत्मचिन्तन और परमात्मा के चिन्तन का लक्ष्य दें। जैसे गोली चलाने वाले को अच्छा निशानेबाज बनाने के लिए एक प्वाइंट दिया जाता है। गोली उसी प्वाइंट पर लगनी चाहिए नहीं तो फेल माना जाएगा। इसी प्रकार हम भी मन और बुद्धि को बिन्दु रूप आत्मा और बिन्दु रूप परमात्मा पर टिकाने का अभ्यास करें। महसूस करें कि मेरी सम्पूर्ण चेतना दो बिन्दुओं पर केन्द्रित है। उनमें से एक मैं स्वयं आत्मा हूँ और दूसरा बिन्दु परमात्मा है। इन दो प्रकाशमान बिन्दुओं के अलावा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, जड़-चेतन सब भूला हुआ हो। यही राजयोग है। इस अवस्था में आत्मा, परमात्मा पिता का सम्पूर्ण प्यार और शक्तियाँ पाने के योग्य होती है। यह पावर हाउस से सीधा कनेक्शन है जिससे आत्मा में सर्व शक्तियाँ भरपूर हो जाती हैं। कर्मक्षेत्र पर कर्म करते-करते उसमें जो खालीपन, दोष, दुर्गुण आ गए थे, इस अभ्यास से उन सबका सफाया होकर वह पुन: भरपूरता की स्थिति में आ जाती है। बुद्धि के पास इस सात्विक सुख का स्टाक जमा हो जाता है जिसके बल से वह मन को निकृष्ट और अल्पकाल के सुखों की ओर जाने से रोक पाती है। इस प्रकार आत्मा आसक्तियों से मुक्त हो सम्पूर्ण आज़ादी का अनुभव करती है। यही सच्ची आज़ादी है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

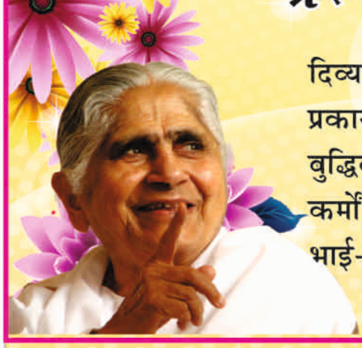

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न: आपने बाबा के साथ किस सम्बन्ध का बहुत सुख पाया है?

उत्तर: सभी सम्बन्धों में मैंने सखा सम्बन्ध का बड़ा सुख पाया है। सखा रूप में बाबा मेरा साथी बना है, इससे साक्षी हो करके पार्ट बजाने में बड़ा सहज हो गया है। मैं अकेली नहीं हूँ, बाबा मेरा साथी है, वह अव्यक्त हो करके, निराकार और साकार मिल करके हर आत्मा को अपने जैसा निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बना रहा है। इसमें हम बाबा को कॉपी करते हैं तो बाबा भी खुश होता है। बहुतकाल से योग के अनुभव से स्मृति स्वरूप रहे हैं कि मैं कौन हूँ, मेरा कौन है? ए आत्मा, बी बाबा, सी आई एम चाइल्ड, डी ड्रामा, इ इटर्नल हैं, एफ फ्यूचर हमारे हाथों में है।

प्रश्न: बाबा के सारे ज्ञान का सार क्या है?

उत्तर: जीवन-यात्रा सच्चाई, प्रेम और विश्वास से सफल करो। हमारे जीवन को देख औरों का जीवन सफल हो। और कुछ काम नहीं करने का है, इतनी सेवा करते हुए कर्मातीत बनना है। बाबा के सारे ज्ञान का सार भी मन्मनाभव है। दुनिया में रहते हुए भी न्यारा रहना है। कर्म भले करो पर सम्बन्ध व कर्म में न्यारे रहने का अभ्यास करो। कई कहते हैं, दादी अभी हम यह करेंगे, गे, गे... यह गे, गे कब तक कहते रहेंगे, अभी करो ना। किया हुआ दिखाई पड़े ना। कैसे करें, क्या करें ... यह शोभता नहीं है। दुनिया की भेंट में भाषा कितनी चेंज हो गई है। जो भाषा बाबा ने सिखाई है उसे हर भाषा वाले समझ गये हैं, यह भी वन्डर है। बाबा की सूक्ष्म और सिम्पल बातें हैं, तो काहे को बैठके सिम्पल बातों को अर्थात् राई को पहाड़ बनायें। पहाड़ को भी राई बनाना, बाबा ने सिखाया है। कोई हैं जो राई को पहाड़ बना देते हैं।

प्रश्न: गुणों में मुख्य गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तर: कैसे करें, क्या करें की बजाय पाँच बातें नेचुरल लाइफ में हों। पहले है पवित्रता, अगर थोड़ा भी यथार्थ संकल्प नहीं है तो चेहरा मूँझा हुआ है। संकल्प मेरा बताता है, पवित्रता से योगबल कितना जमा कर रहे हैं। पवित्रता से सत्यता ऑटोमेटिक जीवन में धारण हो जाती है। परमात्मा सत्य है, पवित्रता से दिल बहुत साफ है तो सच्चा है। फिर है धैर्य, थोड़ा भी अधैर्य हुए तो क्वेश्चन उठेगा, क्या करूँ, कैसे करूँ? कहाँ गई पवित्रता? कहाँ गई सत्यता? इसलिए नाज़ुक नहीं बनना है। कभी भी ऐसी फीलिंग आई, क्या करूँ, कैसे करूँ... मतलब यह अच्छा नहीं है, शोभता नहीं है। देखा गया है कि कई बाबा के बच्चे हैं, थोड़ा कभी किसी का अपमान किया है, वो फीलिंग है इसलिए न मैं किसी का अपमान करूँ, न कोई मेरा अपमान करे पर कोई ने किया तो हर्जा नहीं। पवित्रता, सत्यता, धैर्य, फिर है नम्रता और मधुरता। मान का भूखा नहीं, अपमान में फीलिंग नहीं आती। सबसे बड़ी

सूक्ष्म इच्छा है मान की। पवित्रता, सत्यता, धैर्य से स्वमान में रह सकते हैं। व्यवहार में बड़ों को रिगार्ड देना, समान वालों को रिस्पेक्ट देना नेचुरल है।

प्रश्न: सेवा में सफलता न होने का कारण क्या है?

उत्तर: बाबा कहते, सिर्फ तुम अपना पुरुषार्थ अच्छा करो, अन्य ज़िम्मेवारी भले कुछ नहीं सम्भालो। तुम अपना करो। मेरे लिए पुरुषार्थ कोई और नहीं करेगा। बाबा भी नहीं करेगा। हम हिम्मत और विश्वास से करेंगे, तो बाबा की मदद काम करती है। अपनी घोट तो नशा चढ़े, घोटना शब्द सिर्फ कहने के लिए नहीं है, अनुभव की बात है कि अपने को देख, औरों का दर्शन बन्द कर, सावधानी से पर का चिंतन बन्द करना जैसे जादू का काम हो जाये। इससे जीवन में बहुत परिवर्तन आयेगा। स्व-चिंतन और पर-चिंतन में कितना अन्तर है, जैसे अन्धे को आँख मिली। स्वचिंतन, शुभचिंतन में रहने से सब काम आपे ही हो जाता है, इसमें बहुत शान्ति से काम लेना होता है। कई जगह मैंने देखा है, नाम सेवा है, चिंतन पर का है इसलिए सफलता नहीं मिलती।

प्रश्न: कभी-कभी खुशी क्यों समाप्त हो जाती है?

उत्तर: बाबा हम बच्चों को शक्ति भी देता है, खुशी भी देता है। पहले खुश रहने की शक्ति देता है इसलिए सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो हम खुश न हों। कारण कुछ है ही नहीं, अगर कारण आता भी है तो देखने के लिए कि यह कहाँ तक खुश है? क्योंकि जब से बाबा के बने हैं, बाबा से खुशी मिली है, तब तो बाबा के पास बैठे हैं। सेवा करते हैं, खुशी मिलती है। अगर मैं एक सब्जेक्ट में भी कमज़ोर हूँ तो खुशी नहीं होगी। योग कम होगा तो खुशी नहीं होगी। जो हमारे नियम-मर्यादायें बने हुए हैं, उनके अनुकूल अगर नहीं चलते हैं, कुछ भी मिस किया है तो खुशी नहीं होगी। भले सेवा करेंगे पर अन्दर खुशी नहीं है।

बाबा कहते हैं, कोई रह न जावे इसलिए सन्देश दो। सारे विश्व में पता चल गया है, ब्रह्माकुमारियाँ क्या हैं? कइयों को पता है ज्ञान क्या है? परन्तु पहले जो लाइट-लाइट का अनुभव होता था ना, वो अनुभव हो। इतना हमारे योग का बल हो। जो राइट काम है वही करना है। इतनी तो बुद्धि है, विवेक है जो थोड़ा राइट नहीं है वो मुझे नहीं करना है। तो जिसको अन्दर से यह पक्का है कि जो बात ठीक नहीं है वो नहीं करनी है, तो ऑटोमेटिक वो उससे फ्री हो जाते हैं, यह मैं अनुभव से कहती हूँ। किसके दबाव प्रभाव में आ करके कोई गलत काम करते हैं, यह भी माया है। किसी भी कारण से गलत काम करने से खुशी नहीं रहेगी, कोई न कोई प्रकार से सजा मिलेगी। छूटेगा नहीं, जब तक रियलाइज नहीं किया, माफी नहीं मांगी।

प्रश्न: क्या हमें पाप कर्मों से माफी मिल सकती है?

उत्तर: बाबा कितना अच्छा रहमदिल है, फ्राख़दिल है, एक ही टाइम में कहता है, याद में रहो। योग माना कनेक्शन से माइट मिल जाती है। याद से अचल-अडोल हैं, कोई चिंता वा फिकर नहीं, यह अपना अटेन्शन रखना पड़ता है। बाबा के हरेक महावाक्य में बड़ा अर्थ समाया हुआ है। याद में रहो तो विकर्म विनाश होंगे। अभी बाबा का बनने के बाद विकर्माजीत बनो, कोई भूल करके फिर से विकर्म नहीं करो। फिर भी बाबा कहता है, अगर भूल की हो तो बाबा को सच-सच बताओ। बाबा माफ करने में बहुत होशियार है। अगर मैं सच्ची दिल से बात न करूँ, रियलाइज न करूँ तो सजायें भी देता है। इसलिए कर्म में सावधान रहना है। बाबा एक ही टाइम तीन काम करता है, एक तो विकर्म विनाश करता है, दूसरा माफ भी करता है फिर श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति बहुत देता है, इन तीनों बातों का मुझे तो बहुत अच्छा अनुभव है। ❖

अलौकिक दौलत, जो शिवबाबा से मिली

ब्रह्माकुमार धर्मदास, दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)

मैं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में कार्यरत हूँ। मेरा अलौकिक जन्म 04-05-2012 में हुआ। सन् 2006 में मेरा विभागीय कार्य के संबंध में चंदखुरी (छत्तीसगढ़) जाना हुआ। वहाँ पर ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र द्वारा लगाई गई चित्र प्रदर्शनी में मुझे सृष्टि चक्र का ज्ञान सुनने तथा समझने का सुअवसर मिला। भाग्यविधाता बाबा ने बीजरूपी ज्ञान-मन्त्र उसी समय ही बच्चे के हृदय में गाड़ दिया। लगभग छह साल बाद बाबा ने दुबारा बच्चे का हाथ अपने हाथों में लिया और दिशाहीन को नयी दिशा प्रदान की। सोचता हूँ, इस पतित और भ्रष्ट दुनिया में अगर कोई सच्चा साथी, प्रेमी, सतगुरु, जीवनमुक्तिदाता, भाग्यविधाता है तो वह है सब आत्माओं का पिता परमात्मा (निराकार) शिवबाबा। उनसे मिलकर कौड़ीतुल्य जीवन हीरेतुल्य बन गया।

शिवबाबा की दृष्टि पाकर मुझे और मेरी युगल को खुशियों का पारा चढ़ गया। हम दोनों बहुत ही सौभाग्यशाली हैं जो शिवबाबा ने विकारों (माया) से मुक्ति दिलाकर फरिश्ता स्वरूप बनाया है। लौकिक पुत्र सहित पूरा परिवार शिवबाबा के परिवार में शामिल हो गया है। ज्ञान रूपी गाड़ी को बाबा द्वारा गति मिली तो अनुभव हुआ कि बच्चे भले ही कल्याणकारी बाप को भूल जाते हैं परन्तु अपने बच्चों को बाबा कभी नहीं भूलते। वह बाप जो ठहरा, सदा अपनी दृष्टि के सामने रखकर पालना देते रहते हैं।

समानता लौकिक और अलौकिक में

लौकिक जीवन में माता-पिता अपने बच्चे के लिए इसी चिन्तन में रहते हैं कि यह कैसे स्वस्थ रहे, शारीरिक, मानसिक विकास कैसे हो, किसी प्रकार की बीमारी इसे न लगे, उच्च शिक्षा तथा अच्छे संस्कार मिलें। भोजन खुद कम खाकर बच्चे को भरपेट खिलाते हैं। इसका आभास भी बच्चे को नहीं होने देते कि वे भूखे हैं। बच्चे को सिरदर्द, बुखार या किसी भी प्रकार की मामूली चोट लगने पर ऐसा महसूस करते हैं मानो खुद के प्राण निकल रहे हैं। हर मुश्किल का सामना करते हुए एक-एक पैसा अपने बच्चे के लिए जोड़ते हैं ताकि बच्चे को धन की कमी न हो। ठीक इसी प्रकार, पारलौकिक पिता भी अपने बच्चे (आत्मा) को दृष्टि के घेरे (लक्ष्मण रेखा) में रखकर सुख, शान्ति, प्रेम देते हैं और ज्ञान रूपी इन्जेक्शन लगाकर पवित्र तन, पवित्र मन का अधिकारी बनाते हैं। हर रोज स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक (मुरली) पिलाकर 21 जन्मों के लिए निरोगी बना देते हैं। ऐसे हैं हमारे सौदागर बाबा, जो बच्चों के सभी दुखों का बोझ अपने ऊपर ले लेते हैं। ऐसे दाता बाबा से सौदा कर लेना ही समय की पुकार है। मुझे बाबा से जो अलौकिक दौलत मिली है उसका वर्णन कर रहा हूँ।

दृष्टि रूपी दौलत

पहली दौलत के रूप में बाबा से दृष्टि मिली जिससे अतीन्द्रिय सुख-शांति का अनुभव हुआ। जिसके ऊपर परम आत्मा की दृष्टि है उसे और कुछ पाने की आवश्यकता नहीं है। उनकी दृष्टि में वह ताकत है जिससे मनुष्य देव समान बन सकता है।

शक्ति रूपी दौलत

दूसरी दौलत शक्ति के रूप में मिली। शारीरिक शक्ति से कहीं अधिक बड़ी है आत्मा की शक्ति, जो परमपिता परमात्मा से मिलती है तथा सदा साथी बनकर साथ रहती है। इनमें समाने की शक्ति, समेटने की शक्ति, परखने की शक्ति, सामना करने की शक्ति, सहयोग शक्ति तथा निर्णय करने की शक्ति शामिल हैं। जिसके पास ये शक्तियाँ हों भला वह कमज़ोर कैसे हो सकता है? परिस्थिति कितनी भी विपरीत हो, शक्तियों द्वारा उसे आसानी से अनुकूल बनाया जा सकता है।

पवित्रता रूपी दौलत

पवित्र तन, पवित्र मन सोने-चाँदी, हीरे जैसी कीमती धातुओं से कहीं अधिक मूल्यवान दौलत है। पवित्रता परमात्मा से मिलने की पहली सीढ़ी है। इसकी मदद से राजयोग द्वारा राजसिंहासन प्राप्त होता है। पवित्रता के आगे पाप (माया) घुटने टेक देते हैं। पवित्रता ही सत्यता है, पवित्र की ही पूजा होती है। परमात्मा को साथी बनाने से अपवित्रता (माया) दूर चली जाती है और पावन बनने का द्वार खुल जाता है।

प्रेम रूपी दौलत

प्रेम जन्म तो लेता है मगर मरता नहीं। वह अमर, अविनाशी है। ढाई अक्षर ''प्रेम'' में ममता, मधुरता और अपनापन समाया हुआ है। प्रेम होता क्या है, वह शिवबाबा से ही जाना। प्रेम, सीमाहीन है। प्रेम-रस से ही आत्मा की प्यास बुझती है। प्रेम के आगे क्रोध की दीवार तथा पत्थर भी पिघल जाता है। बच्चे के प्रति बाबा का असीम प्रेम देखकर खुशी के मोती दोनों नयनों से झरने लगते हैं, दूसरी तरफ सौभाग्यशाली होने का भी गर्व होता है कि हमें परमात्मा के प्रेम की दौलत मिली।

ज्ञान रूपी दौलत

शिवबाबा ने मुझे ज्ञान-गंगा में स्नान करवाया, ज्ञान-अमृत पिलाया तथा ज्ञान की अमरकथा सुनाकर मृत्युलोक से अमरलोक में जाने का पथ दिखाया। आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान सुनाकर सृष्टिचक्र का राज समझाया। मोती प्राप्त करने के लिए जैसे सागर के तले डुबकी लगानी पड़ती है, ठीक वैसे ही ज्ञान-सागर में डुबकी लगाये बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। धन्य बाबा तेरा ज्ञान, पतित बन जाता है तेरे ज्ञान से महान। ❖

विचारों का तूफ़ान हुआ शांत

ब्रह्माकुमार डॉ.मल्हार देशपांडे, एम.एस.नेत्र विशेषज्ञ, मालेगांव

माइन्ड-बॉडी मेडिसिन कॉन्फ्रेन्स के निमित्त पहली बार मेरा आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर) जाना हुआ। ईश्वरीय ज्ञान में आने से पूर्व जब भी कोई कार्य करता था तो मुझे दूसरे-दूसरे विचार आते रहते थे। बचपन में जब स्कूल जाता था तो रास्ते में अपने आप से ही बातें करता था कि मुझे बहुत बड़ा आदमी बनना है, मेरी इतनी खेती होगी, इतने कारखाने होंगे आदि-आदि। जब डॉक्टर बना तो रोगियों को चेक करते समय मन में विचार आते थे कि मैं शेयर मार्केट में निवेश करूँ, कोई फैक्टरी खोलूँ या हॉस्पिटल की और शाखाएँ खोलूँ। कहने का आशय है कि मैं हमेशा विचारों में डूबा हुआ रहता था। जैसे ही मैं ज्ञानसरोवर पहुँचा, कार में से एक पाँव उस भूमि पर रखा, विचारों का तूफान शांत हो गया। जाने से पूर्व मैं यह सोचकर गया था कि दिन में चार बार फोन करके हॉस्पिटल के निर्माण कार्य के बारे में पूछता रहूँगा और उन्हें मार्गदर्शन देता रहूँगा परन्तु पूरे सम्मेलन के दौरान मैंने एक भी फोन नहीं किया और ना ही उसके बारे में मन में कोई विचार आये।

पहुँचने के अगले दिन सवेरे 3.30 बजे उठकर स्नान आदि कर क्लास करने पहुँचा, थकान महसूस होने लगी तो क्लास से मैं वापस कमरे पर आया और सोचा कि थोड़ा-सा लेटता हूँ। जैसे ही पलंग पर लेटा, मोबाइल की घन्टी बजी। कॉल सुनने के लिए उठा, देखा तो कोई मिस कॉल नहीं। मैंने मालेगाँव फोन करके अपनी युगल से पूछा, क्या आपने मुझे फोन किया था? उन्होंने कहा, आप इतनी अच्छी जगह गये हो, भला मैं क्यों आपको परेशान करूँ? घर से फोन नहीं, कहीं और से भी फोन नहीं, फोन की घन्टी तो मैंने सुनी। मैं सोच में पड़ गया, ऐसा क्यों हुआ? फिर संकल्प आया कि शायद भगवान मुझे कह रहे हैं, जाओ, जाकर क्लास करो और मैं तुरन्त क्लास करने चला गया।

उसी रात सोने से पूर्व एक मित्र, जो इस सम्मेलन में आये थे, कहने लगे, आपके खर्राटों की आवाज बहुत ज्यादा है, हमारी नींद में विघ्न पड़ा। तब मैं भगवान से बातें करने लगा, 'हे भगवान! हम 700 कि.मी.दूरी से आये हैं, मेरी वजह से इनकी नींद खराब हो रही है, आप मेरी ये तकलीफ चार दिन के लिए बंद कर देना......।' सवेरे उठते ही सभी ने मुझे कहा, आज तो आपके खर्राटों की जरा-सी भी आवाज नहीं आयी। मैं समझ गया, भगवान ने शुभभावना के संकल्प को पूरा किया।

अच्छा करें, अच्छा पायें

ब्रह्माकुमार डॉ.वीरेन्द्र सिंह यादव, इटावा

ऐसे बहुत-से लोग हैं जिन्हें अच्छे कर्मों के बदले अच्छा फल मिलने और बुरे कर्मों के बदले बुरा फल मिलने वाली बात पर संदेह है। हो सकता है, उन्होंने स्वयं अच्छे काम करके बुरा फल पाने का अनुभव किया हो या अच्छे काम करने वालों को बुरा फल पाते देखा हो। संसार में ऐसे भी लोग हैं जिन्हें उम्मीद न होते भी अच्छा फल मिला। आइये हम कर्मफल की स्पष्टता के लिए एक उदाहरण लें –

पाप का घड़ा भर गया

मान लीजिए, हमारा जीवन एक 'यू' आकार की नली की तरह है। जन्म लेते समय इसके आधे हिस्से में अच्छाई भरी थी और आधे में बुराई। हम इसे आधा पुण्य और आधा पाप भी कह सकते हैं। पाप-पुण्य के चक्कर में नहीं जाना चाहें तो हम इसे आधा सकारात्मक और आधा नकारात्मक भी कह सकते हैं। हम जब कोई अच्छा काम करते हैं, तो इस ट्यूब के अच्छाई वाले आधे हिस्से में अच्छाई जाती है और दूसरी तरफ से उतनी ही बुराई बाहर निकलती है क्योंकि ट्यूब पूरी तरह भरी हुई है। अगर हमने किसी का बुरा कर दिया तो ट्यूब के बुराई वाले हिस्से में बुराई घुसी और दूसरी तरफ से उतनी ही अच्छाई बाहर निकल गई। यदि लगातार बुरा ही बुरा करते जाते हैं तो ट्यूब में अधिक बुराई अन्दर जाती रहती है और अच्छाई बाहर निकलती रहती है। हम रिश्वत लेते रहते हैं, चोरी करते रहते हैं, क्रोध करते रहते हैं, बुरा सोचते, बोलते हैं और एक दिन सारी अच्छाई ट्यूब से निकल जाती है। इसके बाद उस नली से केवल बुरा ही बुरा निकलता है। जिस दिन सारी अच्छाई निकल जाती है उस दिन हम चाहे कितने ही ऐशो आराम से रहते हों, बेचैन और विचलित रहेंगे। बड़े बुजुर्ग इसी को तो कहते थे कि पाप का घड़ा भर गया।

बिगड़ जाएगा अगले जन्मों का चक्र

एक घटना बताता हूँ आपको। मेरे घर सफाई करने वाली एक गरीब महिला अपने अच्छे कर्म को नहीं छोड़ती थी। उसे गरीबी मंजूर थी लेकिन गलत काम नहीं। एक दिन बाथरूम में उसे मेरी सोने की अंगूठी मिली, उसे धोकर वापस कर गई। मैंने उससे पूछा, क्या तुम्हें पता है यह अँगूठी कितने की होगी? उसने कहा, दाम तो नहीं पता साहब लेकिन बहुत महंगी होगी, सोना और हीरा तो महंगे ही होते हैं। मैंने पूछा, तुम इसे चुपचाप अपने पास रख भी तो सकती थी, तुम्हारे मन में ऐसा क्या आया जो वापस कर दी। उसने दोनों कानों को हाथ लगाया और कहा, साहब, पिछले जन्म की गलतियों के कारण इस जन्म में गरीबी देख रही हूँ। अभी भी नहीं चेती तो अगले जन्मों का चक्र बिगड़ जायेगा। उस महिला को मैंने मन-ही-मन प्रणाम किया।

ढाल लिया खुद को बदलाव के अनुसार

कुछ दिनों बाद उसने मुझे कहा, मेरी बेटी दसवीं में पढ़ती है, आप उसे गाइड कर दें ताकि वह हाई स्कूल पास हो जाये। मैंने उसे एक शिक्षक के पास भेज दिया। लड़की प्रथम श्रेणी में पास हो गई। फिर लखनऊ में एक रूसी अध्ययन संस्थान की बहन से उसका परिचय करा दिया। लड़की ने रूसी भाषा में पढ़ाई शुरू कर दी। उसे सोवियत संघ की ओर से एक स्कॉलरशिप मिला। लड़की ने कभी ट्रेन तक नहीं देखी थी। एक शाम वह एक्सप्रेस ट्रेन से दिल्ली आई और एरोप्लेन द्वारा मास्को पहुँची। भारत से बहुत लोग पढ़ाई के लिए वहाँ गये थे पर वापस चले आये लेकिन उसने बदलते हुए समय और स्थान के साथ खुद को ढाल लिया। आज वह मास्को में बहुत बड़ा व्यापार समूह सम्भाल रही है। (शेष..पृष्ठ 16 पर)

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 25

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

बाबा का एक गीत है - सद्‌गुण अवगुण के कारण कोई हीरा है कोई पत्थर है...। इस गीत में कवि ने बहुत अच्छी बात बताई है कि गुणों के द्वारा ही व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है, चमकता है और वही हीरा बनता है। पत्थर तो पत्थर ही है जिसको कितना भी घिसो, धुलाई करो मगर वह तो पत्थर ही रहता है। मैंने आज इसलिए इस गीत को याद किया क्योंकि मैंने अभी तक Master of Divine Administration के बारे में 24 लेखों की लेखमाला लिखी है अर्थात् हम सबको बाबा 24 कैरेट का शुद्ध सोने जैसा सर्व गुण व शक्तियों से संपूर्ण बनाते हैं तभी हम सतयुगी दैवी दुनिया में आ सकेंगे। इस लेख के साथ इस लेखमाला को समाप्त करता हूँ।

मेरे जीवन के दो प्रश्न सार रूप में आपके सामने रखूँगा। इन दोनों प्रश्नों की background भी मैं लिख रहा हूँ ताकि यह बात सबको समझ में आये। जब मैं 12-13 वर्ष का था तब मैंने मुम्बई के Indian Merchant Chamber द्वारा आयोजित Book Keeping and Accountancy की परीक्षा दी थी जिसमें मुझे 100 में से 96 या 99 अंक प्राप्त हुए थे। उस परीक्षा में मेरा पहला नंबर आया था। मेरे रिजल्ट को देखकर मेरे लौकिक पिताजी ने कहा कि रमेश तुम्हें तो चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट (CA) बनना चाहिए। बाद में मैं जब साढ़े पन्द्रह साल का था तब मेरे लौकिक पिता जी ने शरीर छोड़ दिया। परंतु उनकी इच्छा जो मेरे प्रति थी उसे पूर्ण करने हेतु मैंने 1954 में बी.कॉम. पास किया। तब मेरे सामने प्रश्न था कि मैं सी.ए. की पढ़ाई कहाँ से करूँ क्योंकि 1954 में भारत के दो विद्यार्थियों ने इंग्लैण्ड से सी.ए. की परीक्षा में पहला व दूसरा नंबर प्राप्त किया था। मैंने भी सोचा कि मैं भी लन्दन जाकर 3 साल की सी.ए. की पढ़ाई करूँ और पहले या दूसरे नंबर से परीक्षा पास करूँ। मैंने अपनी माताजी को कहा कि मैं सी.ए. पढ़ने लन्दन जाना चाहता हूँ तो क्या मैं वहाँ जाऊँ? मेरी माताजी ने कहा कि मैं तो इतनी पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, तुम अपने मामा से पूछो। तब फिर मैंने अपने मामाजी से पूछा तो मामाजी ने कहा कि मैं तो केमिकल इंजिनियर हूँ, मुझे इसके बारे में कुछ पता नहीं है परंतु मेरे एक दोस्त हैं, मैं तुम्हें उनके पास ले चलूँगा, वे तुम्हें बतायेंगे। उनके मित्र उस समय मुम्बई के एक बहुत नामीग्रामी सॉलिसिटर थे। मामाजी ने मुझे उनसे मिलवाया। उन्होंने मुझसे केवल तीन प्रश्न पूछे और उन प्रश्नों से ही मेरे जीवन का फैसला हो गया। पहला प्रश्न था कि आप सी.ए. होकर क्या करेंगे – नौकरी या वकालत? मैंने उत्तर दिया, वकालत करूँगा। दूसरा प्रश्न था, वकालत कहाँ करनी है, भारत में या विदेश में? मैंने उत्तर दिया, भारत में। फिर तीसरा प्रश्न पूछा कि अगर वकालत भारत में करनी है तो लन्दन की कानून की पढ़ाई पढ़ने का क्या मतलब है? भारत के कानूनों की पढ़ाई करो अर्थात् भारत में ही सी.ए. की पढ़ाई करो। इस प्रकार मुझे उस सॉलिसिटर से मार्गदर्शन मिला। मैं आज भी उनको धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मुझे समय पर सही मार्गदर्शन दिया, नहीं तो आज मेरा जीवन क्या होता, यह मैं नहीं जानता। मैं भारत में था इसलिए बाबा के यज्ञ से मेरा सम्पर्क हुआ। मेरे निमन्त्रण पर प्यारे बाबा एवं मातेश्वरी जी मुम्बई में पधारे और उसी से मेरे आध्यात्मिक जीवन की शुरूआत हुई। इस प्रकार इस एक प्रश्न ने मेरे जीवन का फैसला किया।

दूसरा प्रश्न इससे भी ज्यादा गहरा है। सन् 1969 में प्यारे ब्रह्मा बाबा द्वारा मुझे वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट

का मैनेजिंग ट्रस्टी बनाया गया अर्थात् यह जिम्मेदारी मुझे दी गई। ट्रस्ट का मुख्य काम मकान खरीदना और सेवाओं को बढ़ाने में दादी प्रकाशमणि जी को मदद करना था। सबको धीरे-धीरे मालूम पड़ता गया और मेरे पास सभी बहन-भाइयों के पत्र आने लगे। मैं सभी के कागज, फोन आदि की लिस्ट एवं नोट बनाकर रखता था और फिर 15-20 दिन के बाद जब भी दादी प्रकाशमणि जी समय देते थे तब मैं उनके साथ बैठकर उस लिस्ट के प्रमाण जो भी प्रश्न होते थे, दादी जी से पूछता था और उनसे मार्गदर्शन लेता था और उस अनुसार फिर सभी को उत्तर देता था। ऐसे 5-7 वर्ष बीत गये। एक दिन जब मैं ऐसे ही दादीजी से प्रश्नों के उत्तर लिखवा रहा था तो दादीजी ने मुझसे पूछा कि रमेश जी, आप मुझसे प्रश्न क्यों पूछते हो? बाबा ने आपको डायरेक्ट जिम्मेदारी दी है तो आप स्वयं निर्णय क्यों नहीं लेते? मैंने जवाब दिया कि दादीजी, आप हमारे बड़े हैं अत: आप जो भी निर्णय देंगे वे सही ही होंगे और उसमें मेरी भी सुरक्षा (safety) होगी। दादीजी ने मुझसे सीधा ही पूछ लिया, (जो इस लेख का आधार है) रमेश जी, आप बड़े कब बनोगे? एक क्षण तो मैं स्तब्ध हो गया परंतु फिर मैंने कहा कि दादीजी आप तो बड़े हैं ही। बाबा ने आपको निमित्त बनाया है तो हमारा भी फर्ज है कि हम आपके मार्गदर्शन में कार्य करें। दादीजी ने मुझे बताया कि वे कैसे बड़े बने। दादी जी ने कहा कि ब्रह्मा बाबा की बात अलग थी कि उनके साथ शिवबाबा थे परंतु मातेश्वरी जी और हम सभी बहनें अपनी मेहनत और पुरुषार्थ से बड़े बने। मातेश्वरी जी मुम्बई से सिंध में आई और वहाँ पर कुंदनमल हाईस्कूल में पढ़ रही थी तब उन्हें बाबा मिले और फिर उन्होंने बहुत पुरुषार्थ किया और इतनी कम उम्र में वे सबकी मातेश्वरी बनीं। दादीजी ने अपना अनुभव बताया कि वे भी उसी स्कूल में पढ़ रही थी। सबसे पहले उन्होंने बाबा को जसोदा भवन के आँगन में देखा था। फिर वे अपने लौकिक पिताजी की छुट्टी लेकर बाबा के पास आई। ऐसे ही दीदी मनमोहिनी जी तथा अन्य दादियाँ भी आईं। सभी अपनी परखने की शक्ति तथा निर्णय शक्ति का उपयोग कर तथा अपने अनुभवों के आधार पर ही बड़े बने। इसलिए दादीजी ने मुझसे पूछा कि आप बड़े कब बनेंगे? आप कब तक मुझसे पूछते रहेंगे? आगे जाकर यज्ञ का कारोबार बहुत बढ़ने वाला है तब आपको हमसे बातचीत करके प्रश्नों के उत्तर पूछने का समय नहीं मिलेगा अत: आप अभी बड़े बनो।

बाद में मैंने दादीजी की इस बात पर विचार किया तब समझ में आया कि बड़ा बनना मासी का घर नहीं है। बड़ा बनने के लिए मेहनत व पुरुषार्थ करना पड़ेगा। कोई भी आयु, धन, शारीरिक शक्ति से बड़ा नहीं बन सकता। परंतु जब आप अपने अनुभव से और व्यवहारिकता से अन्य को मार्गदर्शन देंगे तभी बड़े बनेंगे। मैंने देखा कि मेरे कई साथी मात्र क्लर्क बनकर ही रह गये, उसी में उनका जीवन बीत गया। लौकिक में भी बड़ा बनना पड़ता है। उदाहरणार्थ जैसे कन्या होती है, विवाह के पश्चात् वह पत्नी, माता, सास और फिर दादी-नानी बनती है। इस प्रकार क्रमश: उसका बड़ा बनने का कारोबार होता है। कई इसमें सम्पूर्ण सफल होते हैं और इस कारण से उनका घर रामराज्य अर्थात् स्वर्ग होता है और कई उसे व्यवस्थित रूप से नहीं निभा पाते इसलिए उनके घर में अशांति, समस्यायें सदा ही रहती हैं। बड़े बनने की एक कला है और इस कला से सम्पन्न बनने के लिए इस लेखमाला में मैंने 24 लेख लिखे ताकि संगमयुगी और सतयुगी कारोबार के लिए हम बड़े बनकर लायक बन सकें। संगमयुग के पुरुषार्थ से ही सतयुग में भी हम श्रेष्ठ पद प्राप्त करते हैं जैसे साधारण प्रजा, साहूकार प्रजा, राजा, महाराजा और फिर विश्व महाराजा आदि-आदि। दूसरे शब्दों में कहें तो 9 लाख में से चुनकर 16108 की माला में आयेंगे, 16108 की माला में से चुनकर 108 की माला में आयेंगे और अगर और जास्ती श्रेष्ठ पुरुषार्थ करेंगे तो 8 की विजयी रत्नों की माला में आकर विश्व महाराजन-विश्व महारानी बनेंगे। जितना जो बड़ा बनाता है उतना उसको ऊँच पद प्राप्त होता है परंतु कई ऐसे भी हैं जो

बड़े बनते ही नहीं।

अभी-अभी एक भाई के साथ मेरी बात हुई, उनकी उम्र करीबन 65 वर्ष के ऊपर की थी। वे भाई दादा-नाना भी बन गये हैं फिर भी मेरे पास आकर कहने लगे कि मुझे किसी का प्यार नहीं मिलता है। बचपन में मुझे मेरी माँ ने प्यार किया था उसके बाद से मैं प्यार के लिए उम्रभर तड़पता रहा हूँ। तब मैंने उन्हें कहा कि आप देवता बनो। आप दूसरों को प्यार दो तो आपको प्यार मिलेगा। स्नेह, शक्ति, प्रेम आदि के दाता बनो। परंतु उस भाई ने कहा कि नहीं, पहले मुझे प्यार मिलना चाहिए। तब मैंने सोचा तो पाया कि भाई भले ही 65 वर्ष से ऊपर की उम्र के हैं परंतु कभी भी परिवार में बड़े नहीं बन सके। जो व्यक्ति अपने छोटे से परिवार को ही सुख, शान्ति व प्रेम से नहीं चला सकते उन्हें राजा, महाराजा का पद कैसे मिल सकता है। राजा बड़ा तब है जब वह अपनी प्रजा का बहुत ध्यान रखता है, उन्हें सुख देता है, उससे बड़ा बनता है तो वह महाराजा बनता है और उससे भी बड़ा बनकर जब पितृवत् प्रजा की पालना करता है तब विश्व महाराजा बनता है। जब हम ज्ञान में आते हैं तब लक्ष्य तो सबका एक ही होता है परंतु बड़ा बनने के लिए उस पद के लायक बनने के लिए जो पुरुषार्थ करना चाहिए वह सब नहीं करते।

मुझे याद आता है कि जब हमने 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' का प्रोजेक्ट लिया था तब सबसे सवाल पूछे थे कि आपको क्या चाहिए? तब एक स्कूल के बच्चे ने लिखा था कि मुझे अच्छे माँ-बाप चाहिएँ। तब मुझे ख्याल में आया कि सभी माँ-बाप चाहते हैं कि हमें अच्छे बच्चे चाहिएँ परंतु जब अच्छे माँ-बाप नहीं बन सकते तो फिर अच्छे बच्चों की चाहना कैसे रखते हैं? इस प्रकार हम जितना स्वयं सन्तुष्ट होकर औरों को सन्तुष्ट करेंगे, उनकी पालना करेंगे उतना हम महान बनेंगे। इसी प्रकार परिवार के बड़े बनना अर्थात् परिवार को सन्तुष्ट करना। धन्धा करते हैं तो अपने साथियों को सन्तुष्ट करना चाहिए। व्यापार तो कई करते हैं परंतु सभी पूर्णरूपेण सफलता प्राप्त नहीं करते। व्यापारी कोई अरबपति, कोई करोड़पति तो कोई लखपति बनते हैं परंतु यह तब होता है जब हम उस लायक बनते हैं और आगे बढ़ते हैं। राज्य कारोबार में भी ऐसे ही होता है। छोटा-सा गाँव होता है तो उसके कारोबार के लिए सरपंच होता है, शहर के लिए मेयर होता है उससे ऊपर राज्य के लिए मुख्यमन्त्री होता है और देश के लिए प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि होते हैं। मैंने इसलिए ये प्रश्न लिखे हैं कि आप भी कब बड़े बनेंगे? बड़ा बनने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता है। पुरुषार्थ में योग द्वारा अष्टशक्तियाँ प्राप्त होती हैं जैसे कि समाने की शक्ति, सहन करने की शक्ति, परखने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति, सामना करने की शक्ति, सहयोग की शक्ति, समेटने की शक्ति, विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति आदि जिसका सामुदायिक स्वरूप है सर्वश्रेष्ठ राजयोगी। इसलिए सतयुगी दुनिया के लिए गायन है – सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म, मर्यादा पुरुषोत्तम। ऐसा गायन योग्य बनने के लिए इतना श्रेष्ठ पुरुषार्थ और मेहनत करनी पड़े।

अव्यक्त बापदादा ने कहा है कि कई ऐसा पुरुषार्थ करते हैं जिसके आधार पर उनका गायन होता है, कई ऐसा पुरुषार्थ करते जिसके आधार पर उनका पूजन होता है, कई ऐसा पुरुषार्थ करते जिसके आधार पर उनका गायन, पूजन, कीर्तन सब कुछ होता है। कइयों का गायन उनकी मृत्यु के बाद 15 दिन तक ही चलता है तो किसी का ज्यादा दिन चलता है।

मैंने मातेश्वरी जी से एक बार पूछा था कि अगर आप ब्रह्माकुमारी नहीं बनती तो आपके जीवन का लक्ष्य क्या होता? उन्होंने बहुत सुन्दर जवाब दिया कि अगर मुझे बाबा नहीं मिला होता तो मैं ऐसा कर्त्तव्य करना चाहती जैसे 400 वर्ष पूर्व मीराबाई ने किया था। मीराबाई को आज भी लोग याद करते हैं। मैं भी ऐसा श्रेष्ठ कर्म करती जो इतिहास के पन्नों पर मैं एक यादगार बन जाती। हमने देखा कि

(शेष..पृष्ठ 20 पर)

गतांक से आगे ...

मानव जीवन में धन की उपयोगिता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

जो मनुष्य हर हथकंडे से धन इकट्ठा करके उस पर कुण्डली मार कर बैठता है वह या तो सांप के समान है या गधे के समान। ऐसा धन सांप के मरने पर ही काम में आ पाता है। आत्मा में बैठे पांच विकारों रूपी सांपों के मरे बिना दिव्य गुणों का खजाना प्राप्त नहीं हो सकता। गधे के ऊपर यदि जवाहरात भी ढोए जाएं, जैसेकि अलीबाबा ढोता था, तो भी गधे का जीवन वैसा का वैसा ही रहता है। जो धन-जवाहरात काम में नहीं आते वे ईंट-पत्थर के समान हैं। आज के धनाढ्य लोभी, लॉकर में सोने की ईंट रखते हैं और बुद्धि में पत्थर जैसी जड़ता। आज का मनुष्य लॉकरों में भरे अपने धन को याद करता रहता है जो कभी भी उसके किसी काम नहीं आता और उस परमपिता शिव को याद नहीं करता जो कई जन्मों का भाग्य बना देता है। इस प्रकार वह स्थूल धन को लॉक रखता है और जो बुद्धि ईश्वर में लगनी चाहिए उसे ब्लॉक कर देता है, उस पर मानो गॉदरेज का लॉक लगा लेता है। वह मनुष्य गधे की तरह केवल इसलिए मेहनत करता है ताकि और ज्यादा धन लॉकरों तक ढोया जा सके।

भगवान को तलाशते हैं, अपने अन्दर की तलाशी नहीं लेते

एक नामी चोर को पता चला कि मन्दिर में किसी भक्त ने एक बहुमूल्य हीरा दानपात्र में डाला है और मंदिर का पुजारी उस हीरे को किसी सुरक्षित स्थान पर जमा कराने के लिए यात्रा पर निकल रहा है। चोर ने भी यात्री होने का स्वांग भरा और यात्रा के दौरान पुजारी से मेलजोल बढ़ा लिया। रात में दोनों एक धर्मशाला में गये तो वहां एक ही कमरा खाली था अत: पुजारी व चोर एक साथ ठहर गये। रात में जब पुजारी खर्राटे भरने लगा तो चोर ने गहनता से हीरे की कई बार खोज की परन्तु पुजारी के सामान व कपड़ों में उसे हीरा नहीं मिला। प्रात: जब दोनों धर्मशाला से विदा होने लगे तो निराश चोर अपनी जिज्ञासा न रोक पाया और पुजारी से बोला कि आपने मुझे पहचाना नहीं, मैं फलाना चोर हूं और आपके हीरे को प्राप्त करने के लिए आपके साथ यात्रा कर रहा हूँ। मुझे पता है कि हीरा आपके पास है परन्तु रात में कई बार की तलाशी के बाद भी मैं हीरे को पा नहीं सका। मैंने अब उस हीरे की प्राप्ति का ख्याल त्याग दिया है, बस आप कृपा करके मुझे यही बता दो कि हीरा आपने छिपाया कहाँ था? पुजारी ने हँस कर कहा कि मैं तो तुम्हें पहले ही पहचान गया था। रात में सोते समय नजर बचा कर मैंने खूंटी पर टंगे तुम्हारे कुर्ते की जेब में हीरा डाल दिया था और जब रात भर की मेहनत से थके तुम प्रात: देर तक सो रहे थे, तब हीरा वापस निकाल लिया था। यह कहानी आज के मनुष्यों की है। वे जीवन भर अपने इष्टदेव के प्रति भक्ति-यात्रा इस आश से करते हैं कि उनके कष्ट दूर हो जायें और अकूत धन बिना मेहनत मिल जाये परन्तु ईश्वर ने भक्तों के कुर्ते (शरीर) की जेब (आत्मा) में जो गुण व शक्तियों का धन डाला हुआ है, उससे वे आजीवन अनजान रहते हुए अपनी जीवन-यात्रा पूरी कर लेते हैं। वे भगवान को तलाशते रहते हैं और अपने अंदर की तलाशी नहीं लेते। वे अपनी जेब देखते ही नहीं। उक्त चोर ने तो जिज्ञासा दिखाई परन्तु आज का आम व्यक्ति तो अंत समय तक जिज्ञासा भी नहीं करता। बुद्धि की 'जड़ता' से आत्म-सजगता व जिज्ञासा-वृत्ति का नाश हो जाता है। आत्म-ज्ञान व परमात्म-ज्ञान तो प्राप्त करने से मिलता है

परन्तु हमेशा से प्राप्त मौलिक गुण व शक्तियों के अकूत आत्मिक धन को सुषुप्त रखते हुए दुर्गुणों से भरा अशक्त जीवन बिताना, भला यह कैसा दुर्भाग्य है! आत्मिक-धन से संपन्न जीवन देवी-देवताओं का था। आइये, गुणों व शक्तियों से धनवान बनें, न कि 'मायावी-आसक्तियों के महारोगी।'

धन का संग्रह करना दूसरों को सताने के समान है

यह विचित्र कुदरती विधान है कि पाप का धन रावण के कारागार (लॉकर) में बंद रहता है, कल्याण के कार्य में नहीं लगता। काला धन कमाने वाले इसे बेनामी नाम से बैंक में रखते हैं। स्विस बैंक में अरबों-खरबों मूल्य का काला धन कैद की सज़ा भुगत रहा है और इसे जमा कराने वालों के नाम यदि उजागर होते हैं, तो उनकी बुद्धि ही नहीं बल्कि शरीर भी कैद की सजा भुगत सकते हैं। धन का संग्रह करना दूसरों को सताने के समान है। स्विस बैंकों में जमा काले धन से भारत का विकास बाधित हो रहा है जिससे गरीब व मध्यम वर्ग विकट परिस्थितियों में जी रहा है। यह देखने में आ रहा है कि विदेशों में रखे काले धन को सरकार जब्त न कर ले इसलिए इसके जमाकर्त्ता इसे सोने (Gold) में बदल कर गुप्त रीति से भारी मात्रा में भारत में ला रहे हैं। सन् 2014 के प्रथम नौ माह में ही करीब 70,000 करोड़ रुपये का सोना भारत में आयात हो चुका था जिसमें चोरी से लाया गया सोना शामिल नहीं है। सिर्फ सितंबर, 2014 माह में ही स्विटजरलैंड से भारत को 15,000 करोड़ रुपये का सोना निर्यात किया गया। चूंकि कलियुग समाप्ति पर है और सतयुग में भारत सोने की चिड़िया बनने वाला है अत: कुदरती घटनाक्रम कुछ इस प्रकार से घटित हो रहे हैं जिससे भारत में विदेशों से भारी मात्रा में सोना पहुंच रहा है। यह सब तैयारी आने वाले स्वर्णयुग (Golden Age) या सतयुग के लिए हो रही है जहां सोने के महल होंगे। दूसरी तरफ, परमपिता शिव की श्रीमत पर चल कर ब्रह्माकुमार-कुमारियां बड़ी तेजी से अपने संस्कारों को सतोप्रधान बना रहे हैं ताकि आगामी सतयुग में देवी-देवताओं के रूप में प्रत्यक्ष हो सकें। आम आदमी जब तक ये बातें समझ पायेगा, बहुत देर हो चुकी होगी।

जो किसी के काम ना आए वह है मरा हुआ धन

यह कहना कि फलाने का धन से बहुत प्रेम है, सही नहीं क्योंकि प्रेम जैसे महान गुण के सामने धन बहुत छोटी वस्तु है। धन से तो गुप्त मोह होता है जो जग-जाहिर होने पर लोभ कहलाता है। लोभवश धन जमा करने में कोई भी बाधा क्रोध लाती है और धन प्राप्ति के बाद अहंकार आता है। ऐसा मोही, लोभी, क्रोधी व अहंकारी व्यक्ति कामी न हो, यह हो नहीं सकता। इस प्रकार पांचों विकार या तो बंदर में होते हैं या धन संग्रहकर्त्ता में। बंदरिया का धन उसका बच्चा होता है, जिसके मरने पर भी बंदरिया छाती से लगाए फिरती है। लोभी भी मरे हुए धन को छाती से लगाए फिरता है। जो धन किसी काम में न आए वह धन मरा हुआ ही तो है। मनुष्यात्मा है चैतन्य और धन है जड़। चैतन्य आत्मा यदि जड़ से मोह करने लगे तो आत्मा में जड़ता बढ़ती है। परन्तु चैतन्य आत्मा जब दूसरी आत्माओं से प्रेम करने लगती है तो उसके धन में चैतन्यता अर्थात् गति आ जाती है अर्थात् प्रेम उस मनुष्य को व उसके धन को, दोनों को कल्याणकारी बना देता है। वो धन को दूसरों की भलाई में लगाने लगता है। स्पष्ट है कि प्रेम का गुण मोह व लोभ, दोनों विकारों पर भारी पड़ता है। पुण्य कार्य के अभाव में धन-सम्पत्ति खाद के समान है। खाद का यदि एक जगह ही ढेर लगा हो, तो उतनी जगह में खेती भी नहीं होती व खाद भी मिट्टी तुल्य है परन्तु जब इसे खेत के बाकी हिस्से में फैला दिया जाता है तो पूरे खेत को शक्ति मिलती है और फसल लहलहाती है। उसी प्रकार धन को जब समाज में फैला कर सफल किया जाता है तब धन-शक्ति से खुशहाली की फसल लहलहाती है अन्यथा धन खाद के ढेर के समान है।

अगर दो मित्र एक-दूसरे से एक-एक रुपये की अदला-बदली करें तो दोनों के पास एक-एक रुपया ही रह जाता है। यदि दोनों एक-दूसरे से अपने-अपने गुण की लेन-देन करें तो दोनों के पास दो-दो गुण हो जाते हैं अर्थात् धन है स्थूल, जिसकी बढ़त धीमी होती है और गुण हैं सूक्ष्म, जिनकी बढ़त तीव्र गति से होती है। जब धन पर-कल्याण में फैला दिया जाता है तब आत्मा के गुण भी उजागर होते हैं और पुण्य की प्रालब्ध भी संग्रहित होती है।

विकर्म छूटते हैं योगी होने से

धन व जल, दोनों की यह विशेषता है कि ये बिखरने पर कल्याण करते हैं। जल को यदि रोक कर रखा जाए, जैसे कि कुएँ या तालाब के जल को लंबे समय तक उपयोग में न लाया जाए तो सड़ जाता है। नकद पैसे को भी यदि लॉकर में लंबे समय तक रखा जाए तो उसमें फफूंद लग कर सड़ावट आ जाती है। कहावत है, जल बिना जीवन नहीं परन्तु मनुष्य की सोच है, धन बिना जीवन नहीं। आज यदि किसी के पास ज्यादा धन है तो अपराधी उसका जीवन ले कर, धन लूट लेते हैं अर्थात् अधिक धन है तो जीवन नहीं। जीवनमुक्ति चाहने वाले धनी को जीवन से ही मुक्त कर दिया जाता है। पीने का जल आज बोतल में बिकता है। धन हेतु मनुष्य का ईमान भी शराब की बोतल से बिक जाता है। कपड़े या वस्त्र की धुलाई जल से होती है, शरीर की धुलाई भी जल से होती है परन्तु मन की धुलाई तो ज्ञान-जल से होती है। कितना भी गंगा-स्नान क्यों न किया जाए, विकारों के वस्त्र से आत्मा मुक्त नहीं हो सकती। कामासक्ति व धनासक्ति के वश किये गये विकर्मों की आत्मा पर इतनी गंद चढ़ी हुई है जो या तो परमपिता शिव से योग लगा कर छूटती है या अंत में धर्मराज द्वारा आत्मा की धुनाई (धुलाई) से अर्थात् योगी होने से विकर्म नष्ट होते हैं, मात्र 'ज्ञानी' होने से नहीं।

भगवान वरदान देते, माया वैर-दान देती

ध्यान उस दिशा में गमन करता है, जहाँ आसक्ति है, न कि जहाँ भक्ति है। मंदिर में हाथ जोड़ कर, आंखें बंद कर खड़ा भक्त मांगता भी है तो अपनी धन-सम्पदा की बढ़ोतरी अर्थात् जिसमें फंसा है उसमें और फंसने की कामना। अपना ध्यान ईश्वर में लगाने की बजाय वह ईश्वर का ध्यान अपने धन की बढ़ोतरी में लगवाना चाहता है। एक समय था जब धनाढ्य भक्त धन का उपयोग ईश्वर को पाने हेतु करते थे और आज का धनाढ्य भक्त ईश्वर का उपयोग धन को बढ़ाने हेतु करता है। धन को ईश्वरीय कार्य में लगा देने पर ध्यान भी ईश्वर में लगने लगता है। ईश्वर की याद में मेहनत है परन्तु धन तो स्वतः याद आता रहता है। अतः मन को धन की याद से निकाल कर ईश्वर की याद में लगाना तब संभव है जबकि धन ईश्वर को अर्थात् ईश्वरीय कार्य के लिए दे दिया जाए और अपने पास उतना ही धन रखा जाए जितना कि आवश्यक है। ईश्वर से सुख-शान्ति का वरदान लेने का यह भी एक तरीका है। धन व सम्पत्ति उसी के लिए वरदान है जो इसे दूसरों के लिए वरदान बना दे परन्तु माया तो वैर-दान करती है अर्थात् दो के बीच में खड़ी हो कर दोनों को आपस में धन के लिए लड़ा देती है, उनमें वैर करा देती है। **(क्रमशः)**

अच्छा करें, अच्छा पायें ..पृष्ठ 10 का शेष..

बाद में उसकी माँ उसके पास चली गई। अब लखनऊ में उसका बहुत बड़ा बंगला है। दिल्ली, मुम्बई में तो है ही। उस औरत ने अच्छाई का दामन नहीं छोड़ा। उसकी ट्यूब में ढेरों पुण्य समाते गये और दूसरे छोर से सारे पाप निकल गये। जिस दिन सारे पाप निकल गये, ट्यूब के पास निकालने को सिर्फ अच्छा-अच्छा ही रह गया। यह हम पर ही निर्भर करता है कि हम अल्पकाल के लिए दुखों को सहते हुए पुण्य के खाते को बढ़ाना चाहते हैं या पाप करते हुए अपने पुण्य के खाते को खत्म करके दुख को बार-बार झेलना चाहते हैं। ❖

उदारता – सात्विक खाद्य पदार्थों के वितरण में

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

ग्रामीण क्षेत्र की एक महिला ने बताया कि मेरे घर में दो बहुएँ हैं, रसोई वे ही सम्भालती हैं, पड़ोसनें मुझे सलाह देती हैं कि तुम देशी घी के डिब्बे को ताले में रखा करो, बिना ताले के घी जैसी महंगी चीज़ ज्यादा खर्च हो जाती है। फिर उसने पूछा, क्या मुझे इस सलाह को अमल में ले आना चाहिए?

देशी घी काफी महंगा है और ग्रामीण समाज में आज भी लोगों में घी खाने का शौक देखा जा सकता है। वास्तव में महंगी तो सभी चीज़ें हो गई हैं परन्तु जितनी महंगाई बढ़ी है उतनी लोगों के हाथ में पूँजी भी बढ़ी है। जब शुद्ध देशी घी 100 रुपये प्रति कि.ग्रा.था तब एक शिक्षक की तनख्वाह 6000 रुपये मासिक थी, आज जब शुद्ध देशी घी 500 रुपये प्रति कि.ग्रा.हो गया है तो शिक्षक की तनख्वाह बढ़कर 30000 रुपये मासिक हो चुकी है। इस प्रकार महंगाई और आमदनी दोनों साथ-साथ दौड़ रही हैं।

ज़रूरी खाने–पीने की चीज़ों को ताला लगाना माना खुशियों को ताला लगाना

मानव का खाने-पीने का खर्च काफी सीमित होता है इसलिए कि पेट का दायरा सीमित है। अत: खाने-पीने पर इस तरह अंकुश न लगे कि घर का कोई सदस्य, उसमें भी सबकी सेवा का दायित्व उठाने वाला सदस्य अपने को मनचाही खुराक से वंचित समझे। ऊपर हमने जिस घटना का जिक्र किया, उस प्रकार की स्थिति में हम यह विचारें और समझें कि एक चम्मच घी (20 ग्राम) की कीमत यदि 10 रुपये है और घर के किसी सदस्य ने एक या दो चम्मच ज्यादा खा लिया या खिला दिया तो उसकी कीमत 20 रुपये ही बनती है, लेकिन यदि ऐसा करके वह खुश रहता है, उमंग में रहता है, मुसकराता हुआ सबकी सेवा करता है तो ये 20 रुपये कोई बड़ा खर्च नहीं है। खाने-पीने की ज़रूरी चीज़ों तो ताला लगाना माना खुशियों को ताला लगाना।

दवा के खर्च में कटौती नहीं कर सकते

हम देखते हैं कि आजकल छोटी-छोटी आयु के लोग बीमार हो जाते हैं। एक-एक व्यक्ति को एक-एक दिन में डॉक्टर 50 रुपये तक की (इससे ज्यादा भी) दवा भी बता देते हैं। इस खर्च को हम ताला नहीं लगा सकते, कटौती भी नहीं कर सकते। दवा पर खर्च ना करना पड़े इसके लिए स्वास्थ्य के अनुकूल और स्वास्थ्यवर्धक चीज़ें खाने-खिलाने में क्या हर्जा है? मन खुश न होने पर शरीर ऐसे लगने लगता है जैसे इसे बुखार हो। व्यक्ति सोया रहेगा, सिर दर्द, कमर दर्द का बहाना करेगा, डॉ.को दिखाने की फीस खर्च करेगा। इतनी तकलीफें सहने से तो अच्छा है कि मन को उमंग में रखा जाए और खाने-पीने में दिल खुला रखा जाए।

सात्विक खाने–खिलाने से कोई गरीब नहीं होता

यह भी देखने में आता है कि कई सांसारिक रीति-रिवाजों में ज़रूरत बिना भी खूब खर्च किया जाता है, ब्याह-शादी, त्योहार, पार्टी, जन्मदिन आदि के नाम पर महंगी सजावट करते हैं, बाजे बजाते हैं, उपहार देते हैं, विभिन्न प्रकार का भोजन बनाकर फिर झूठन फेंकी जाती है, इनका बिल कई बार हज़ारों को पार कर लाखों में पहुँच जाता है। इस खर्च को हम सह लेते हैं पर यदि घर का कोई सदस्य फल खा ले, ज्यूस पी ले या मनपसन्द भोजन बनाकर खा ले तो कइयों को रास नहीं आता है। जहाँ हम लाखों की बर्बादी कर देते हैं उसके आगे यह छोटा खर्च कुछ भी नहीं है। अत: हम अपने दृष्टिकोण को बदलें। सात्विक खाने या खिलाने से कोई गरीब नहीं होता, गरीब होता है फैशन से, व्यसनों से, दिखावे से, क्रोध, हिंसा, अपशब्दों से, किसी भी विकार के वश होकर किए गए कर्मों से और मुकदमों से। भारत के सोने और हीरे से भरे मटके यदि खाली हुए हैं तो व्यसनों और विकारों के कारण, न कि भोज्य पदार्थ खाने और खिलाने से। कोई व्यक्ति दोनों हाथों से भी खाए तो भी कितना खा

लेगा? खाने की हमेशा सीमा है क्योंकि पेट की सीमा है, पेट की यह सीमा भी उम्र के साथ-साथ घटती जाती है। अत: हम धन का नाश करने वाली बुरी आदतों पर कड़ा शिकंजा रखें पर खाने-पीने के पदार्थों को उदारतापूर्वक वितरित करें। ब्रह्माकुमारीज़ के साकार संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा हमेशा यह शिक्षा दिया करते थे कि सात्विक खाने-पीने की चीजों पर ज्यादा खर्च नहीं होता इसलिए सात्विक खान-पान पर बन्दिश नहीं लगानी चाहिए।

पुरानी बात वर्तमान रिश्तों के बीच आ खड़ी होगी

एक अन्य महिला ने बताया कि मेरी सास पुराने विचारों की थी। उसका मानना था कि फल, दूध आदि पुत्रों को ही खाने चाहिएँ और पुत्रवधुओं को छाछ-रोटी खाकर काम चलाना चाहिए। उसके ऐसे स्वभाव के चलते मैंने शादी के 30 वर्षों बाद तक कभी फल छुआ ही नहीं। सास ने 15 वर्ष पहले शरीर छोड़ दिया पर मैं अभी भी फल नहीं खाती हूँ जबकि अब घर में फल और दूध पहले से भी ज्यादा उपलब्ध रहते हैं। पाठकगण विचार करें कि एक पुरानी बात का बोझ मन पर बनाए रखने का क्या फायदा? अच्छा तो यह होता कि सास की अंत्येष्टि के साथ ही इस बात की भी अंत्येष्टि कर दी जाती और वे सामान्य जन की भाँति फलों का उपयोग करती। पर चूँकि उस बात को चित्त पर रखा हुआ है इसलिए कहीं भी फल देखते ही वह दिवंगत आत्मा फिर साकार हो उठती है। इस बात को स्मृति में बनाए रखने का नुकसान स्वयं के साथ-साथ अगली पीढ़ी को भी होगा क्योंकि जब यह अपनी बहुओं को फल खाते देखेगी तब फिर यह पुरानी बात वर्तमान रिश्तों के बीच आ खड़ी होगी। ऐसे में नकारात्मक बातों को ऐसे दफन कर देना चाहिए कि नामोनिशान भी ना मिले और ज्ञानयुक्त नए विचारों, सकारात्मक विचारों के साथ जीवन-यात्रा पर कदम बढ़ाते रहना चाहिए। यदि किसी की दी हुई अच्छी सीख है तो उसे अवश्य याद रखें, लेकिन किसी के अनुदार स्वभाव-संस्कार की बात को तुरन्त भुला दें। जीवन जीने की कला यही है। ❖

बाबा ने संवार...पृष्ठ 29 का शेष..

वाहन दिला दिया। चार वर्ष पूर्व ही एक मकान खरीदा। एक कमरे में बाबा तो दूसरे कमरे में परिवार के हम छह सदस्य रहने लगे। ब्रह्माकुमारीज पाठशाला बाबा ने खुलवा दी। मेरा शुभ संकल्प था कि पूरा परिवार और मोहल्ले वालों का भी कल्याण जरूरी है। बाबा कहते हैं, 'चैरिटी बिगिन्स एट होम' और बाबा ने यह संकल्प भी पूरा कर दिया। आज बाबा ने मकान के ऊपर दूसरा मकान बनाकर दे दिया। माताजी भी अब बाबा के ही आशीर्वाद से सरकारी नौकरी करती हैं और मुझे भी 20000 से 25000 रुपये माह का रोजगार अपने ही विद्यालय में बाबा ने दे रखा है।

मेरे जीवन को बाबा ने इतना संवार दिया है कि यदि लौकिक पिता भी होते तो शायद ही ऐसे दिन आते। बाबा हर पल यही अनुभव कराते हैं कि पिता कहीं नहीं गये, साये की तरह साथ-साथ हैं। विद्यालय में छह घंटे के बाद जो भी समय बचता है, गीता पाठशालाओं में सेवा बाबा ने दे रखी है, उनमें समय सफल हो रहा है। इस प्रकार बाबा ने निजी जीवन और आध्यात्मिक जीवन दोनों ही संवार दिए। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

एक स्नेही भाई ने ज्ञानामृत के अगस्त, सितम्बर, 2015 के अंक उपलब्ध कराये थे। दादी जानकी जी की बातें हृदय को छू गई। आज मानव कहलाने वालों में अधिकतर में दशानन के भावों जैसे कि काम, क्रोध, मद-मोह आदि का प्रादुर्भाव और उनकी अनंत वृद्धि भारत को दग्ध, दु:खित, कृष और अंतत: नष्टप्राय: किये जा रही है। ऐसे रावण से बचाव हेतु पवित्रता से भी पूर्व सत्य की पालना अनिवार्य है। पत्रिका में सभी कुछ पठनीय और उपयोगी है। चित्र और शुद्ध छपाई चार चाँद लगाती है। पढ़कर शांति मार्ग की ओर प्रगति होती है।

– सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु', कामवन, भरतपुर (राज.)

मैं खुशनसीब हूँ बाबा

ब्रह्माकुमार एम.एल.माहेश्वरी, उज्जैन

मैं बचपन से ही तर्कबुद्धि रहा हूँ। जब तक कोई बात बुद्धि के स्तर पर समझ नहीं आ जाए उस पर कार्य नहीं कर पाता हूँ। इसी कारण, किसी धर्मगुरु के प्रवचन सुनते हुए भी या धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हुए भी उनमें कोई सक्रिय सकारात्मक योगदान नहीं दे पाया। कई बार मन में विचार आता था कि सेवानिवृत्त जीवन कैसे व्यतीत होगा?

ज्ञान के प्रति सकारात्मक भाव

मेरे घर के नजदीक ही ब्रह्माकुमारीज़ का सेवाकेन्द्र है परन्तु नौकरी की अति व्यस्तता की वजह से कभी वहाँ पर जाने का विचार ही नहीं आया। हाँ, ज्ञान के प्रति एक सकारात्मक भाव अवश्य था कि यह संस्था और इससे जुड़े लोग बड़े ही शान्तिप्रिय व अनुशासित हैं। ये भक्तिमार्ग के अन्य मंदिरों, आश्रमों की तरह जब चाहे बड़ा-सा माइक लगा कर पूरी कॉलोनी का जीवन अशान्त नहीं करते हैं।

ज्ञान लगा स्वीकार्य

मेरी स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के दिनों में ही सेवाकेन्द्र द्वारा बड़े स्तर पर एक छः दिवसीय कार्यक्रम ''कर लो स्वास्थ्य मुट्ठी में'' आयोजित किया गया जिसके पर्चे पूरे शहर में बाँटे गए। यह कार्यक्रम राजयोगी डॉ.दिलीप नलगे द्वारा सम्बोधित किया गया। जीवन के अब तक के अनुभवों से उपजे नकारात्मक भावों व पूर्वाग्रह के कारण प्रथम दिवस तो मैं कार्यक्रम में गया ही नहीं परन्तु सौभाग्य से डॉ. नलगे का उद्बोधन, घर बहुत नजदीक होने के कारण मेरे कानों में सुनाई पड़ रहा था। दूसरे दिन से मैं युगल के साथ कार्यक्रम में जाने लगा। कार्यक्रम बेहद प्रभावशाली था। ब्रह्माकुमार भाई जी, मनुष्य की रोजमर्रा की ज़िन्दगी की समस्याओं की जड़ को पकड़ कर, मूल पहचान ''मैं देह नहीं आत्मा हूँ'' तक जिस तरह से ले गए, वह इतना स्वीकार्य लगा कि उसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। तभी से धीरे-धीरे बाबा का होता चला गया।

भय, भटकाव व अस्पष्टता से मुक्ति

नियमित मुरली क्लास अटैंड करने के लिए (यद्यपि ज्यादा समझ में न आने व बहुत स्वीकार्य न लगने के बावजूद भी) सेवाकेन्द्र पर जाना जारी रहा। सौभाग्य से उन्हीं दिनों आस्था चैनल पर "Awakening With Brahmakumaris" का प्रसारण शुरू हुआ था। मैं पूरी ईमानदारी के साथ कहता हूँ कि यदि शिवानी बहन व कनुप्रिया बहन का यह कार्यक्रम नहीं सुन रहा होता, तो शायद मेरा बाबा से जुड़ना कहीं ज्यादा मुश्किल होता। इस कार्यक्रम ने बाबा के ज्ञान (24 कैरेट सोने के समान शुद्ध) को, किस प्रकार जेवर बनाकर शरीर पर (जीवन में) धारण करना है, यह बहुत अच्छे से सिखा दिया। इसके लिए दोनों बहनों व इस कार्यक्रम का जितना भी आभार माना जाए, कम है। इस नए ज्ञान द्वारा मुझे भक्तिमार्ग के भय, अस्पष्टता व व्यर्थ के भटकाव से मुक्ति मिली तथा स्वयं की और परमात्मा की सत्य पहचान के साथ जीने का आनन्द लेना आ गया। अतीन्द्रिय सुख शब्द मैंने सुना तो था परन्तु वह वास्तव में होता क्या है, अब जाना।

कोई प्रश्न अनुत्तरित न रहा

इसके बाद बहनों से मिली पालना द्वारा, मधुबन घर के प्रकम्पनों द्वारा व कुछ कार्यक्रमों के संबंध में अन्य सेवाकेन्द्रों पर जाने से जाना कि यह ज्ञान कितना सच्चा, पारदर्शी व परम है। इसे जानने के बाद मेरे जीवन में कोई प्रश्न अनुत्तरित

नहीं रहा, मैं स्वयं को प्रश्नों के पार पाता हूँ। जीवन का उद्देश्य मिल गया, जीने का कारगर तरीका मिल गया। इस पूरी यात्रा में युगल भी मेरे साथ समान स्तर पर खड़ी हैं। दो विवाहित पुत्रों व दो पोते-पोतियों सहित एक सफल, सुखद, भरा-पूरा परिवार है। इन सबके साथ गृहस्थ व्यवहार व आध्यात्मिक मार्ग में बैलेन्स बना कर जितना अधिक से अधिक पुरुषार्थ संभव है, कर रहा हूँ।

परिवार व ईश्वरीय सेवा के बीच सन्तुलन रखें

हमें यह ध्यान रखना है कि हम घर-परिवार व सेवाकेन्द्र के प्रति अपने कर्त्तव्य के बीच कुशल साधक की तरह सन्तुलन बनाकर रखें। कोशिश यह रहे कि ये दोनों कर्त्तव्य कभी भी एक-दूसरे के मार्ग में अवरोध न बन पाएँ। हर एक को अपनी व्यक्तिगत परिस्थिति व स्थिति के अनुसार खुद ही तय करना होगा कि इस सन्तुलन को किस प्रकार साधा जाए। अपने अनुभव से मैंने यह जाना कि यदि हम दोनों जगह पूर्णरूपेण सच्चाई से चलें तो हमें बाबा का सौ प्रतिशत सहयोग व मार्गदर्शन ऐसा मिलेगा कि कोई अप्रिय स्थिति कभी आएगी ही नहीं। यह मैं पूरी दृढ़ता और ईमानदारी से कह रहा हूँ, यह निजी अनुभव है। ❖

ईश्वरीय कारोबार ...पृष्ठ 13 का शेष

मातेश्वरी जी 1965 तक के छोटे से कार्यकाल में भी श्रेष्ठतम पुरुषार्थ कर जगदम्बा बन गई। हमारी दादियों के जीवन को देखते हुए भी हमें मालूम पड़ता है कि साधारण होते हुए भी पुरुषार्थ के आधार पर उन्होंने कितनी ऊंची अवस्था को प्राप्त किया है। उदाहरणार्थ, आदरणीया दादी जानकी जी मुम्बई में कितने स्थानों पर पैदल जा-जा कर सेवा करते थे, उसके बाद उन्होंने दिल्ली, पंजाब, अमृतसर आदि स्थानों पर सेवायें की और फिर कई वर्षों बाद पूणे में आये, वहां पर सेवायें की और 1974 में विदेश सेवार्थ निमित्त बने। आज हम उनका विदेश सेवाओं का वटवृक्ष देख रहे हैं और अभी वे हमारे यज्ञ की मुख्य संचालिका हैं।

इसलिए इस प्रश्न के साथ यह लेखमाला समाप्त करता हूँ और आप सब वाचकगण से मेरा प्रश्न है कि आप भी अपने जीवन में बड़े कब बनेंगे? इस प्रश्न के आधार पर ही आप अपने भाग्य का सितारा चमकायेंगे। जैसे रत्न होते हैं उनमें भी कोई साधारण, कोई अच्छा, कोई बड़ा होता है ऐसे ही हम आत्मायें भी अपने पुरुषार्थ के आधार पर सतयुगी दुनिया में अपना पद निश्चित करते हैं। बाबा ने कहा है कि आप जितने बड़े बनेंगे उतना आपके ताज में रत्न जड़े जायेंगे। लेकिन महाराजा और विश्व महाराजा बनने के लिए कमाई हमें संगमयुग पर ही करनी है। इस बात पर मुझे भ्राता ओम व्यास जी (प्रसिद्ध गायक) का एक अनुभव याद आ रहा है, वह मैं बता रहा हूँ – भ्राता ओम व्यास जी ने एक बार अपने चाचाजी भ्राता भरत व्यास (सुप्रसिद्ध गीतकार, गायक) से पूछा कि आपको यह बैज (लक्ष्मी-नारायण का) कहाँ और कैसे मिला? तो भरत जी ने कहा कि मेहनत से। लक्ष्मी-नारायण बनने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। ब्रह्माकुमारीज़ में यह बैज दिया जाता है। वहाँ पर सभी का लक्ष्य यही बनने का है और इस लक्ष्य के आधार पर ही लक्षण धारण करने होते हैं, तभी ऊँच पद की प्राप्ति हो सकती है।

जैसे मैंने आपको ऊपर दो प्रश्न बताये और उसी अनुसार मेरा जीवन बना, उसी प्रकार आप भी अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ के आधार पर अपना जीवन श्रेष्ठ बनायें, आप भी इस जीवन में बड़े बनें और भविष्य में भी राजा, महाराजा एवं विश्व महाराजा बनें, इन्हीं शुभभावनाओं और शुभकामनाओं के साथ मैं यह लेखमाला समाप्त करता हूँ। ❖

कर्म-सिद्धांत

ब्रह्माकुमारी नीता, बोरिवली (पश्चिम), मुम्बई

ढाई अक्षर का शब्द 'कर्म' अपने भीतर बहुत ही असाधारण अर्थ समेटे हुए है। सामान्य बोलचाल की भाषा में हर क्रिया जैसे चलना, बोलना, हँसना को कर्म कहा जाता है किंतु ज्यों-ज्यों हम गहरे उतरेंगे, कर्म का क्षेत्र उतना ही विस्तृत होता जाएगा।

कर्म के कानून में कोई अपवाद नही

समस्त विश्व कर्म के अटल नियम के अनुसार चल रहा है। कर्म-कानून के सामने अमीर-गरीब, काले-गोरे का कोई भेद नहीं। सभी को समान और सही न्याय दिलाने वाले इस कानून में कोई अपवाद हो नहीं सकता। 'जैसा कर्म करोगे वैसा फल पाओगे' इस सिद्धान्त के अनुसार हर एक को सुख या दुख प्राप्त हो रहा है। बिना कारण किसी को सुख-दुख की प्राप्ति नहीं होती। जैसे कैमरा आकृति को, रेडियो ध्वनि को और मैगनेट लोहे को अपनी ओर खींच लेता है वैसे ही राग-द्वेष से युक्त आत्मा भी गलत कर्म की ओर खिंची चली जाती है। 'अच्छे कर्मों का फल अच्छा और बुरे कर्मों का फल बुरा' इस बात को जिसने अपने मन पर अंकित किया है वह हर परिस्थिति का सामना बुद्धिबल तथा मन की स्थिरता से सहज ही कर लेता है। किसी व्यक्ति, साधन, वातावरण को दोषी न बनाकर उसका जिम्मेवार खुद को ठहराकर शान्त हो जाता है।

कर्त्ता–भोक्ता आत्मा ही है

कर्म-सिद्धांत हर मनुष्य के लिए मार्गदर्शक का कार्य करता है। सही-गलत, सुख-दुख की पहचान कराता है। कई महान विभूतियों ने कर्म-सिद्धांत की गरिमा को पहचाना और जीवनपथ पर अग्रसर होने का उपाय बताया कि 'कर्म करते चलो, फल की अपेक्षा न रखो। कर्म का फल स्वत: ही हर किसी को प्राप्त हो जाएगा।' गीता में वर्णित कई श्लोक हमें कर्म की गुह्यता का प्रमाण देते हैं और अशुभ कर्म से निवृत्त होने की शक्ति प्रदान करते हैं। व्यवहारिक जीवन में हर कदम पर कर्म-सिद्धांत के अनुसार सावधानी रखकर चलें तो मनुष्य बहुत अंशों में पाप-कर्मों से बच सकता है। कर्म का कर्त्ता और भोक्ता स्वयं आत्मा ही है। कर्म एक बच्चे के समान है। कर्म रूपी बालक संकल्प रूपी गर्भ में पलता है। सही समय, शक्ति और वायुमण्डल प्राप्त होते ही वह जन्म ले लेता है। इसके जन्म लेते ही आत्मा को भी समय, शक्ति, साधन इस पर खर्च करने पड़ते हैं, भले ही कर्म नामक बच्चा अच्छा हो या बुरा।

कर्म रूपी बीज कभी निष्फल नहीं जाता

आत्मा अपनी भावना, धारणा और संकल्प अनुसार कर्म करने के लिए स्वतंत्र है लेकिन हर क्रिया की प्रतिक्रिया और प्रतिक्रिया की पुन: क्रिया – यह प्रक्रिया आत्मा को कर्मबन्धन में बांध देती है। जैसे मकड़ी बहुत सुंदर जाल बनाती है और खुद फँस जाती है वैसे ही आत्मा भी इस कर्मजाल में फँस जाती है। क्रिया तो समाप्त हो जाती है लेकिन प्रतिक्रिया दीर्घकाल तक मनुष्य के जीवन पर प्रभाव छोड़ देती है। इसलिए कहते हैं, 'सोच समझकर कर्म करो'। कर्म एक बीज के समान है, वह कभी निष्फल हो नहीं सकता। आत्मा के द्वारा बोए गए हर कर्म का प्रतिफल उसे अवश्य प्राप्त होता है। भले ही वह आज मिले, इस जन्म में मिले या फिर कई जन्मों के बाद मिले, मिलता जरूर है। जैसे गाय का बछड़ा हजारों गायों में अपनी माँ को ढूँढ़ लेता है वैसे ही कर्मरूपी बच्चा भी अपने जन्मदाता को खोज ही लेता है। कर्म व्यक्ति की परछाई के समान साथ चलता है और समय आने पर सुख-दुख रूपी फल देता है।

परमात्मा पिता की पवित्र किरणें जला देती हैं विकर्मों को

आत्मा स्वभावत: शान्त, पवित्र और सतोगुणी है लेकिन देहभान में आकर, विकृति के संग में आकर वह मैली हो जाती है। विकर्मों की परत आने से वह अपने मूल

स्वभाव को त्याग विकारी बन जाती है। विकारों से युक्त आत्मा कर्मबन्धनों को काटने की बजाय और ही नए-नए बंधन बांध लेती है। कर्मबन्धनों से मुक्त होने के लिए आत्मा को परमात्मा से प्यार भरा संबंध जोड़कर उनकी असीम शक्तियों को अपने अंदर समाना आवश्यक है। जैसे सूर्य की किरणें वायुमण्डल की अशुद्धि को खत्म कर देती हैं साथ-साथ अपनी शक्तियों से कई चीजों को भरपूर कर देती हैं उसी अनुसार परमात्मा की पवित्र किरणें ज्यों-ज्यों आत्मा पर पड़ती हैं, आत्मा के अंदर के विकारी कीटाणु खत्म हो जाते हैं और आत्मा सर्वशक्तियों से भरपूर हो जाती है। अपने गुणों, शक्तियों की पहचान और परमात्मा से बुद्धियोग आत्मा को कर्मबन्धनों से मुक्त कर देता है।

पुण्य कर्म की कुल्हाड़ी से भी आत्मा कुकर्मों को काट सकती है। पुण्य कर्म की समझ और उससे प्राप्त होने वाली ऊर्जा आत्मा को जीवनपथ पर आगे बढ़ाने का साधन बन जाती है। कर्मफल की इच्छा न कर अगर मनुष्य 'नेकी कर दरिया में डाल' इस सूत्र पर आरूढ़ हो जाए तो जीवन बहुत सुखदायी और मनोरंजक हो सकता है। ❖

बाबा की मेहरबानी से खोया हुआ बैग मिल गया

ब्रह्माकुमार माणिक, नागपुर (महाराष्ट्र)

रेलवे से सेवानिवृत्ति के बाद सरकार से एक रेलवे पास मिलता है। उसके आधार पर मैंने भुवनेश्वर जाने का रिजर्वेशन करवाया। अगले दिन माउन्ट आबू जाने का रिजर्वेशन करवाना था लेकिन भुवनेश्वर वाली टिकिट में कुछ गलती थी, उसे ठीक कराने टिकिट काउन्टर पर गया। टिकिट बाबू ने मुझे वरिष्ठ लिपिक के पास भेजा। इस आने-जाने में मेरा हैन्ड बैग गुम हो गया। बैग में रेलवे पास, रेलवे का दिया हुआ आई.डी.कार्ड तथा नौ हजार रुपये थे। मैंने ढूंढ़ने का प्रयास किया लेकिन बैग नहीं मिला। मैंने शिवबाबा को याद किया और कहा, बाबा, अब मेरा मधुबन आना मुश्किल है। फिर सोचा, चलो, कम से कम पुलिस चौकी में खबर तो कर दूँ। वहाँ जाकर आपबीती सुनाई और बेंच पर बैठ शिवबाबा को याद करने लगा। चमत्कार यह हुआ कि एक व्यक्ति वहीं ऑफिस में मेरा बैग जमा कराने आया और साथ-साथ पुलिस इन्स्पेक्टर भी आये। मैंने कहा, यही मेरा बैग है। इन्सपेक्टर ने कहा, बहुत भाग्यवान हो, बैग मिल गया, यह भगवान की मेहरबानी है जो रुपये और कागज सही-सलामत हैं। मैंने शिवबाबा को शुक्रिया बोला और गीत की लाइन याद आ गई – 'यह मत कहो खुदा से मेरी मुश्किलें बड़ी हैं, मुश्किलों से कह दो, मेरा खुदा बड़ा है।' ❖

आवश्यकता है – ग्लोबल हॉस्पिटल द्वारा संचालित कम्यूनिटी मोबाइल क्लिनिक में असिस्टेंट पद हेतु 12वीं पास, शारीरिक रूप से विकलांग (काम करने योग्य) भाइयों की आवश्यकता है:-

दिन में 9 बजे से 5 बजे तक इस नंबर पर संपर्क करें :- 9414144062

इस ईमेल पर बायोडाटा भेजें: ghrchrd@ymail.com

बाबा ने बनाया जुआरी से ज्ञान-रत्नों का जौहरी

ब्रह्माकुमार सुरेश, राजयोग भवन, भोपाल

कहा जाता है, सत्य का संग तारे, कुसंग बोरे (डुबोये)। मुझे 20 वर्ष की आयु में कुछ जुआरियों का संग मिला और जुआ खेलने की आदत लग गयी। जुए के साथ-साथ कुछ अन्य बुरी आदतें जैसे माँसाहार, बियर पीना, लड़ाई-झगड़ा करना आदि ने भी मुझे घेर लिया। इस कारण मैं बहुत अशांत, बेचैन रहने लगा। जीवन नर्क के समान बन गया। जैसे मकड़ी अपना जाला खुद बुनती है और उसी में फंस जाती है, मैं भी बुराइयों के जाल में फंस गया। बुरी आदतें छोड़ना चाहता था लेकिन छूट नहीं पा रही थी। घर वाले भी समझा-समझा कर परेशान हो गये थे।

निश्चय हुआ कि भगवान सृष्टि पर आ चुके हैं

लौकिक माता जी काफी समय से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में क्लास करने जाती हैं। एक बार एक ब्रह्माकुमार भाई उन्हें घर छोड़ने के लिये आये। माता जी ने उन भाई से मुझको मिलवाया और उनसे कहा, इनको भी आप सात दिन का कोर्स कराइये। मैं कोर्स करने के लिये तैयार हो गया। दूसरे दिन से उस भाई के साथ एक पार्क में मैंने सात दिन का कोर्स शुरू किया। कुछ ही दिनों में मुझे यह निश्चय हो गया कि परमात्मा पिता इस सृष्टि पर आ करके नई सृष्टि की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। दुख की दुनिया अब जाने वाली है और सुख की दुनिया आने वाली है।

जीवन में आ गई मधुरता और सहनशीलता

इस निश्चय से सभी बुराइयाँ कुछ ही दिनों में जीवन से विदाई ले गईं। जब रोशनी हो जाती है तो अंधकार नहीं ठहरता। जैसे ही जीवन में ज्ञान का प्रकाश आया, अंधकार रूपी बुराइयाँ छूमंतर हो गईं। सारा दिन ईश्वरीय ज्ञान का मनन और शिव बाबा की याद में रहने का पुरुषार्थ प्रारंभ हो गया। जीवन में हल्कापन आने लगा, बोझ, चिंता खत्म हो गए, आंतरिक सुखों के झूले में झूलने लगा। जब ज्ञान नहीं था तब कहीं से भी गुज़रता था तो लोग देखकर कहते थे, जुआरी जा रहा है। ब्रह्माकुमारी संस्था के संपर्क में आने के बाद जीवन में इतना परिवर्तन आया कि लोग कहते हैं, यह तो जैसे देवता जा रहे हैं। इस ज्ञान मार्ग में चलने के बाद सबके साथ संबंध बहुत अच्छे हो गये। जीवन में मधुरता और सहनशीलता जैसे दिव्य गुण आ गये।

पिछले 12 वर्षों से नहीं किया गुस्सा

पहली बार आबू पर्वत जाने के लिए जब निमित्त बहनों के द्वारा प्रोग्राम बना, तो मेरी खुशी का पारावार नहीं था। अव्यक्त बापदादा से पहली मुलाकात में ही मन ही मन वायदा कर लिया कि शिवबाबा, यह सम्पूर्ण जीवन आपके लिये है, आपकी सेवाओं के लिये है। उस दिन बाबा के महावाक्य थे, बच्चे, क्रोध से कभी भी कोई काम बनता नहीं है, क्रोध से तो बने हुए काम भी बिगड़ जाते हैं। आत्मिक स्नेह और सहयोग की भावना से बिगड़े हुए काम भी बन जाते हैं। बाबा के ये महावाक्य तीर की तरह अंदर चले गये और पिछले 12 वर्षों में कभी किसी पर गुस्सा नहीं किया है। जीवन में परिवर्तन को देखकर निमित्त बहनों ने हमारे घर में ही गीता पाठशाला खुलवा दी। वहाँ रोज 50 आत्माएँ ईश्वरीय महावाक्य सुनने के लिए आती हैं। फिर निमित्त बड़ी बहन ने राजयोग भवन में समर्पित होने की आज्ञा दी। हमने बहन जी की आज्ञा को भगवान की आज्ञा समझकर स्वीकार कर लिया। हमारा जीवन बेहद सुखों में सफल हो रहा है। बड़ों की दुआएँ और नि:स्वार्थ प्यार से हर कदम हमें सफलता प्राप्त हो रही है। ❖

भगवान ऊपर से नीचे आ गये हैं

ब्रह्माकुमार देवेन्द्रनारायण पटेल, मुंबई (मुलुंड)

ब्रह्माकुमारी संस्था के 75 वर्ष पूरे होने पर मुलुंड (मुंबई) सबजोन प्रमुख ब्र.कु.गोदावरी बहन को संकल्प आया कि 75 लाख लोगों को 'भगवान धरती पर आ गये हैं', यह खबर देनी चाहिए। इसके लिए सबजोन के कुल छः जिलों में 'देखो, देखो कौन आया, भारत में भगवान आया' नामक शिव रथ-यात्रा दो महीनों तक निकाली गई। यह यात्रा गाँव या शहर में जितनी भी सड़कें, गलियाँ होतीं, सभी में जाती थी। इस प्रकार 75 लाख लोगों की बजाय 87 लाख लोगों को शिवसंदेश सुनाया गया। इस यात्रा के दौरान अनेक अनुभव हुए, जो इस प्रकार हैं –

एक गाँव में हम रात को पहुँचे तो वहाँ यात्रा का स्वागत हज़ारों पटाकों की आवाज़ के साथ किया गया। एक भाई ने रॉकेट वाले पटाके का मुँह आकाश की तरफ करके रखने की बजाय टेढ़ा करके रख दिया। मैं आगे था। जैसे ही रॉकेट को आग लगी, वह सीधा ही शु...ह... करते हुए तीव्र गति से मेरे पाँव से टकरा गया। मेरे नये कुर्ते में छेद करते हुए उसने घुटने के नीचे भी छेद कर दिया। मैं गिर पड़ा। 'यह क्या हो गया' के शोर के साथ बहुत ही भीड़ मच गई। शिव बाबा ने मुझे एकदम जीते जी शरीर से अलग कर दिया। लोग पाँव के जख्म को देख घबरा रहे थे। मुझे तो शिवबाबा ने खड़ा कर दिया और कोई पीड़ा महसूस नहीं हो रही थी। खून बह रहा था, उसे रूमाल बाँध कर बंद कर दिया। फिर भरी सभा में एक घंटे तक, उस सर्वशक्तिवान भगवान शिव ने धरती पर आकर कैसे मुझे मदद की, यह अनुभव सुनाया।

इसके बाद हम दूसरे शहर में पहुँचे। वहाँ पर सार्वजनिक कार्यक्रम था। सारी सभा सजी हुई थी। रोड से लगता सभा-स्थान था। सभा-स्थान के बीचों-बीच कमर तक की गहराई लिए, बिना पानी वाली गटर की नाली थी। उसके ऊपर पाटिया रखा था, उस पर चढ़कर लोग सभा में आ रहे थे। जैसे ही शाम हुई, बिजली चालू कर दी गई। कार्यक्रम चालू हो गया। तभी बिजली चली गई। पूरा अंधेरा छा गया। सभा में हलचल मच गई। मैं आगे से उठकर पीछे रथ की ओर गया, सोचा, रथ की लाइट चालू कर दूँ तो सभा में थोड़ा उजाला हो जायेगा। पीछे की ओर जा रहा था, मुझे उस नाली का ध्यान नहीं रहा, मैं सीधा ही उसमें गिर पड़ा। देखने वाले एक-दूसरे से बातें करने लगे कि अभी तो यह सफेद कपड़ों वाला भाई जा रहा था, अचानक गायब कैसे हो गया। वे दौड़ के आये परंतु मैं जैसे गिरा वैसे ही तुरंत खड़ा होकर, छलांग लगाकर बाहर आ गया। मुझे कुछ भी नहीं हुआ। थोड़ा भी दर्द नहीं हुआ। अनुभव हुआ कि धरती पर स्वयं भगवान पधार चुके हैं, उन्होंने ही मुझे हथेली पर बिठा लिया है वरना ये हड्डियाँ टूट सकती थी। फिर रथ की लाइट चालू करके आया। सबको ताज्जुब हुआ कि इतनी शक्ति आयी कहाँ से? मैंने कहा, भगवान शिवबाबा धरती पर आ गये हैं, उसी का तो यह सत्य सबूत है। आप भी अपने को शरीर नहीं, आत्मा महसूस कीजिए, आपको भी धरती पर आये परमात्मा शिव दिखाई पड़ेंगे। स्थूल नेत्रों से नहीं, तीसरे नेत्र (ज्ञान चक्षु) से वे परमात्मा दुख और मुश्किलों में साक्षात् सामने नज़र आयेंगे।

अगले दिन एक गाँव में हम दोपहर में अढ़ाई बजे पहुँचे। हमने सोचा, गाँव वाले खाना खाके सो गये होंगे, कोई मिलेगा नहीं। फिर सोचा, बाबा ने कहा है, कोई कोना रह न जाये, चलो ज्ञान देते हैं, बाद में खाना खायेंगे। हम गाँव में अन्दर गये। सड़कें एकदम खाली थीं। सभी अपने-अपने घरों के दरवाजे बंद करके सो रहे थे। हम माइक के ज़रिए आवाज़ दे रहे थे लेकिन कोई समीप आ नहीं रहा था। रथ गाँव के भीतर जा रहा था। रास्ते में बिजली की तारें नीचे

दिखाई दे रही थीं। रथ की ऊँचाई ज्यादा थी। रथ को आगे ले जाने के लिए तारों को ऊपर उठाना ज़रूरी था। हमने रथ में बने मंदिर में शिवलिंग के पास बैठे प्रसाद वितरक भाई को नीचे उतार दिया। फिर तार के नीचे से रथ को लेकर जाने का प्रयास करने लगे। जैसे ही तारों को ऊपर किया, रथ की सिल्वर पतरे की बनी बॉडी तार को छू गई। इससे स्पार्किंग हुई, हवा तेज़ चल रही थी, रथ के अंदर चारों तरफ कपड़ा लगा था, उसे आग ने पकड़ लिया। रथ के चारों तरफ आग की ज्वाला भभकने लगी। मैंने एक कंबल को रथ के अंदर-बाहर मारते हुए आग को बुझा दिया। बाबा की इतनी मदद रही कि तेज हवा मंद हो गई और आग शांत हो गई। अंदर रखे शिवलिंग और ब्रह्मा बाबा के चित्र को कुछ भी नहीं हुआ। पहले सड़कों पर कोई नहीं था, बाद में सारा गाँव इकट्ठा हो गया। हमने सबको शिवबाबा का परिचय दिया। सभी ने यही कहा, साक्षात् शिव परमात्मा इस भूमि पर आ गये हैं, उन्होंने ही आग को रोका वरना इसे रोकना किसी व्यक्ति के बस की बात नहीं थी। ''जिसका साथी है स्वयं भगवान, उसे क्या रोके आंधी और तूफान'', ''देखो कौन आया, भगवान ऊपर से नीचे आया'' इन्हीं बुलंद नारों के बीच लोग शिव संदेश सुनने में मग्न हो गये!!

पहले परमात्मा ऊपर थे, हम नीचे थे, हमारी आवाज़ वहाँ तक पहुँचती नहीं थी। अब आवाज़ दो, वे तुरंत ही हाज़िर हो जायेंगे। प्रयास करो क्योंकि वे ऊपर से नीचे आ गये हैं। विस्तार से जानने के लिए निकटवर्ती ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र से सम्पर्क करें। ❖

मिट गई गले की समस्या

ब्रह्माकुमारी विमल, चालीसगाँव

मुझे ईश्वरीय ज्ञान में चलते हुए 30 साल हुए हैं। ज्ञान में आने से पहले मेरे गले में बहुत बड़ी गाँठ थी। बहुत दुखती थी। डॉक्टर ने ऑपरेशन करने के लिए कहा लेकिन बहुत डरती थी क्योंकि उस समय ज्ञान नहीं था। लेकिन जैसे ही ज्ञान सुनने लगी तो बहुत नशा चढ़ा। राजयोग से बाबा सारे दुख दूर कर देते हैं, यह अनुभव किया। मैं योग के दौरान बाबा को गले का हाल बताती थी। इसके बाद मैं ऑपरेशन के लिए तैयार हो गयी। मैंने बाबा पर सौंप दिया, बाबा जो भी करेंगे वह कल्याणकारी ही होगा, इस निश्चय से मैं निश्चिंत हो गयी। चालीसगाँव में डॉ.चव्हाण ने गले का ऑपरेशन किया। ऑपरेशन थिएटर में गयी तो इसी संकल्प से कि बाबा ऑपरेशन करायेगा डॉ.चव्हाण द्वारा। तीन घंटे तक ऑपरेशन चला। सुबह जब होश में आयी तो आँख खुलते ही सामने 'ब्रह्मा बाबा' को देखा। बाबा मुझे देख रहे थे और मैं बाबा को देखती रही। बहुत थोड़े दिनों में ठीक हो गयी, आज दिन तक गले की कोई समस्या नहीं है। ❖

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल: 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: (02974) 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

सादगी और शालीनता

ब्रह्माकुमारी पूजा, रोहतक

कलियुग के वातावरण में जहाँ देखें वहाँ दिखावा ही दिखावा है। शालीनता को तो जैसे लोग भूल ही चुके हैं। पहनावे में अशालीनता, बोल-चाल की अशालीनता, आचार-व्यवहार की अशालीनता और विचारों में भी गंदगी जो फिर कर्मों में स्पष्ट नजर आती है।

कहते हैं, कपड़े का आविष्कार इसलिए हुआ कि लोग गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि से अपनी सुरक्षा कर सकें। परन्तु आज पहनावा फैशन का एक हिस्सा बना हुआ है। आज लोग, खासकर युवा ऐसे कपड़े पहनना पसंद करते हैं जो दूसरों के ध्यान को आकर्षित करें। जब हम असभ्य ड्रेस पहनकर घर से बाहर निकलते हैं तो लोगों की गन्दी नजर हमारा पीछा करती है और हम अपने को उस नजर से बचाने की कोशिश करते रहते हैं। हर गली, मोहल्ले, स्कूल, कॉलेज में यही माहौल है। लोग सभ्यता एवं संस्कारों को भूल चुके हैं।

क्या आज़ादी से जीना छोड़ दें?

इसका नतीजा क्या निकलता है? हम रोज-रोज अखबारों में पढ़ते हैं और टी.वी.पर देखते हैं कि रोंगटे खड़े करने वाली घटनाएँ घट रही हैं। एक बार किसी कॉलेज में इसी मुद्दे पर बातें चल रही थीं तो कुछ लड़कियों ने कहा, बहन जी, एक बात बताओ, दृष्टि, वृत्ति पुरुषों की खराब और पहनावा हम अपना सुधारें, क्यों? उचित तो यह है आप उन्हें समझाओ, अपनी दृष्टि-वृत्ति साफ रखें, क्या दूसरों की वजह से हम आज़ादी से जीना छोड़ दें? यह बात मैं इसलिए कह रही हूँ क्योंकि ज्यादातर महिलाओं की सोच यही कहती है।

हर बार खुद को बदला

मैं बहनों से पूछना चाहती हूँ कि जब ठंड होती है तो हमने गर्म कपड़े पहन लिए, जब गर्मी आई तो गर्मी के हिसाब के कपड़े पहन लिए और जब वर्षा आई तो छाता लेकर अपने को सुरक्षित कर लिया, कभी गर्मी, सर्दी, वर्षा को बदलने की कोशिश नहीं की। हर बार खुद को बदला। तो जब कलियुग के वातावरण में चारों तरफ काम-वासना की, गन्दे विचारों की, विकारी भावों की आग लगी हुई है तो हम इस बात को क्यों नहीं समझ पा रहे कि इस वातावरण में भी खुद को हमें ही सुरक्षित करना है। वातावरण अनुसार जो साधन हमारे पास हैं उन्हें प्रयोग करें और अपना बचाव करें।

सबसे बड़ी बात है आत्म अभिमानी बनने की

मैं यह नहीं कहती कि केवल पहनावे को सभ्य बनाने से हम सौ प्रतिशत सुरक्षित हो जाते हैं परन्तु इतना ज़रूर है कि अगर हम इन बातों पर ध्यान दें तो कुछ प्रतिशत ज़रूर सुरक्षित रह सकते हैं। तो क्यों ना जो सुरक्षा हमारे अपने हाथ में है उसका प्रयोग करें। अगर हमें सौ प्रतिशत सुरक्षा चाहिए तो पहनावे के साथ-साथ, बोल-चाल, आचार-विचार, व्यवहार, सोच – इन सबको भी बदलें। सबसे बड़ी बात है आत्म-अभिमानी बनने की क्योंकि जब तक हम देह अभिमानी हैं तो देखने वाले हमें शरीर ही देखते हैं परन्तु जब हम आत्म अभिमानी बन जाते हैं तो हमारे आस-पास का वातावरण भी हमारे अनुकूल अर्थात् पवित्र हो जाता है।

दूसरी बात, यह सोचना बिल्कुल गलत है कि सभ्यता एवं शालीनता हमारी आज़ादी को खत्म करती हैं या हमारे विकास में बाधा पैदा करती हैं बल्कि और ही हमारे विकास को बढ़ावा देती हैं, हमें संकुचित सोच से निकाल कर उड़ना सिखाती हैं, हमें घुटन और बेचैनी (दम घोटने) वाले माहौल से आज़ाद महसूस कराती हैं। मैं तो कहूँगी, वास्तव में हम गुलाम हैं इन पाँच विकारों के (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार), सच्ची आज़ादी है ही इन विकारों से आजाद होना।

आज हमें ज़रूरत है सही सोच की, सही राह की जो ईश्वरीय ज्ञान से मिलती है। अत: हर रोज़ ज्ञान अमृत हम अपने अन्दर डालें और अपने को सही दिशा में अग्रसर करें। ❖

निराशा हटाओ, खुशी लाओ

ब्रह्माकुमारी मधु, बांटवा (गुजरात)

आज संसार में मनुष्य के पास सच्ची खुशी नहीं है। जिंदगी का सफर बोझ बनता जा रहा है। आइये विचार करें, कहाँ गई अपनी खुशी? कौन ले गया खुशी? हम खुश नहीं हैं तो कारण क्या हैं? कारण हैं (1) नकारात्मक दृष्टिकोण, (2) भौतिकवादी विचार (3) अनियंत्रित इच्छायें (4) पूर्व में किये हुए गलत कर्म (5) संवेदनशील स्वभाव। ये सब बातें हमारी खुशी का गला दबाती हैं। खुश रहने के लिए 'सादा जीवन, उच्च विचार' के महामन्त्र को जीवन में अपनाएँ। वर्तमान में जीएँ, भूतकाल में नहीं। ज्यादा सोचने की आदत को समाप्त करें।

खुशी अनमोल औषधि है

खुशी हर उम्र के, हर वर्ग के व्यक्ति को चाहिए। आज मनुष्य खुशी को बाहरी वस्तुओं, व्यक्तियों, वैभवों, क्लबों, होटलों, पर्यटन स्थलों में ढूंढ़ रहा है। वास्तव में खुशी अंतर्मन में छुपी हुई है। वो बाज़ार में मिलती नहीं। अगर संतुष्ट रहें तो खुशी गले में सजे हुए हार बराबर है। खुशी के खत्म होने के 100 कारण गिनाए जा सकते हैं लेकिन वास्तव में इसके लिए सिर्फ हम ही ज़िम्मेदार हैं। खुशी को कायम रखने के लिए सदा सर्व को खुशी दें, फिर हम भी खुश रह सकते हैं। खुशी देने से खुशी मिलती है। दुख देने से दुख मिलता है। जो देंगे वही मिलेगा, यह एक नियम है। खुशी अनमोल औषधि है, यह हमारे जीवन को अनमोल बनाती है। प्रसन्नचित्त व्यक्ति सर्व को प्रिय लगता है, उसका स्वभाव सरल और नम्र रहता है जिस कारण सभी उसके साथ मिलजुल कर चलते हैं और सभी का सहयोग उसे सहज मिल जाता है। उसे बड़ी परिस्थिति भी हल्की लगती है।

खुश रहते हैं तो हर घड़ी उत्सव है

खुश रहने से हमारा व्यक्तित्व खिल उठता है। दुख रूपी स्थिति कुरूपता को आमंत्रित करती है। खुशी हमारे चेहरे को आकर्षणमूर्त बनाती है। खुशी ही जीवन को हर पल उत्सव बनाती है। खुशी चेहरे का शृंगार है। खुशी की खुराक सम्पूर्ण स्वास्थ्य का आधार है। खुशी की खुशबू सहज दूसरे को अपनी तरफ आकर्षित करती है। सदा खुश रहने के लिए त्यागवृत्ति और देने की भावना रहे। हमारी नज़र लेने में ना जाये। याद रखें – जान चली जाये, खुशी ना जाये। आज की स्थिति देखें तो सबसे ज्यादा खुश छोटे बच्चे रहते हैं जो दिन में 40 बार हँसते हैं। युवा 15 बार हँसते हैं और बुजुर्ग लोगों ने तो हँसना छोड़ दिया है क्योंकि खुशी नहीं है। एक नियम है, ताले को खोलना हो तो चाबी को दाईं और घुमाओ, बाईं और घुमाने से ताला बंद हो जायेगा। सच्ची खुशी का ताला खोलना हो तो दाईं साइड अर्थात् पॉजीटिव साइड विचारों को घुमाओ, जीवन में खुशी अवश्य आ जाएगी।

देखिए, प्रकृति के उपकारों को

हमें प्रकृति ने क्या नहीं दिया? रहने के लिए घर, पहनने के लिए अच्छे कपड़े, भोजन के लिए विभिन्न अन्न, फल, फूल, घूमने-फिरने के लिए अनेक साधन, कुदरती सौन्दर्य, पहाड़, नदी आदि। प्रकृति के पाँचों तत्व सतत् हमारी सेवा में हैं। सच में, यह भी सोचें तो भी खुशी होती है कि प्रकृति ने धरती पर कितनी सुविधायें हमारे लिए रखी हैं, हमें कोई कमी नहीं। हँसते-हँसते ज़िंदगी का हर पल आराम से बीत जाता है और रोते-रोते एक दिन भी एक वर्ष बराबर लगता है। जिस मनुष्य के चेहरे पर खुशी नहीं वह जिंदा होते हुए

भी मुर्दे जैसा है। जैसे गुलाब का फूल काँटों के बीच खिलता, मुसकराता है, हमें भी मुसीबतों के बीच मुसकराते रहना है। जो खुश रहता है उसे सारा जगत खुश दिखाई देता है।

साक्षीद्रष्टा बनें

हर हाल में खुश रहने के लिए यह समझना ज़रूरी है कि सृष्टि एक नाटकशाला है जिसमें हम सब पार्टधारी हैं। जैसे नाटक में सुख-दुख, हार-जीत, निंदा-स्तुति के पार्ट में मज़ा आता है इसी तरह इस नाटक में भी सुख-दुख, हार-जीत, मान-अपमान हमारे सामने आने ही हैं। सृष्टि रूपी नाटक में कोई मुरझाया हुआ है तो कोई गीत गा रहा है, कोई गलत कर रहा है तो कोई ठीक कर रहा है। हरेक के पार्ट को साक्षीद्रष्टा बनकर देखते हैं तो खुश रह सकते हैं।

सर्व की दुआएँ लें

दुख-संकट के समय एक-दूसरे का मददगार बनने से, वृद्ध माँ-बाप की सेवा करने से दुआ मिलती है। दुआ दवा का काम करती है। अपकारी पर उपकार करें, नेक काम करने से खुशी टिकी रहती है। घर में कोई आये तो हंसकर स्वागत करें।

ट्रस्टी बनें

जो कुछ हमारे पास है, सब ईश्वरीय अमानत है। मेरा कुछ भी नहीं, ऐसे समझते हैं तो खुश रह सकते हैं। हरेक मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है। मुझे जो मिला है, वह मेरे भाग्य का है। अपने जीवन की तुलना दूसरों के साथ न करें। दूसरों का विचार करने से खुशी चली जाती है। हम किसी से ईर्ष्या न करें तो खुश रह सकते हैं। आइये, प्रतिज्ञा करें कि हर हाल में खुश रहेंगे, सर्व को मन-वचन-कर्म व चेहरे-चलन से खुशी देंगे।

जिज्ञासा को मिली सन्तुष्टि

ब्रह्माकुमार कृष्ण, सोनीपत

शिक्षण कार्य से निवृत्ति के बाद मुझे आध्यात्मिक ज्ञान की तीव्र भूख थी। मैं अनेक स्थलों पर भगवान की तलाश में भटकता रहा लेकिन भगवान मुझे कहीं मिले ही नहीं। मैंने सोचा, शायद अच्छे कार्यों में ही भगवान बसता है इसलिए बुजुर्गों को पेन्शन दिलवाने में सहयोग, असमर्थ व्यक्तियों की सहायता, अनाथ बच्चों के लिए सहयोग, इनमें ही जीवन का आनन्द ढूंढ़ने लगा। एक दिन अचानक मेरी निगाह टी.वी. के आस्था चैनल पर पड़ी जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ का कार्यक्रम आ रहा था, बहन शिवानी आत्मा से सम्बधित कुछ चर्चा कर रही थी। मैं उन्हें जानता नहीं था लेकिन इस विषय ने मुझ आत्मा को झकझोर कर रख दिया। फिर क्या था? मैं अपने उद्देश्य की पूर्ति में जुट गया। प्रतिदिन वह कार्यक्रम सुनने लगा। एक दिन उनके वक्तव्य का मुख्य विषय था 'मैं कौन हूँ, मुझे अपनी तलाश करनी है।' इसे सुनकर मेरी रुचि और अधिक बढ़ गई। मुझे वास्तविक बात समझ में आने में देर नहीं लगी कि पर-सेवा से पहले इन्सान को अपनी पहचान अवश्य होनी चाहिए। मैं कौन हूँ, मेरा असली पिता कौन है, मैं यहाँ किसलिए आया हूँ, मेरा सम्बन्ध किससे है, इन प्रश्नों का समाधान ज़रूरी है। बहन शिवानी के वक्तव्य से मुझे इन सभी प्रश्नों के उत्तर मिल गये। इसके बाद सन् 2013 में मुझे आबू पर्वत स्थित मधुबन जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

वहाँ का कार्यक्रम बहुत ही अच्छा लगा। वापिस आने पर मैं स्थानीय सेवाकेन्द्र पर नियमित जाने लगा। मेरी हर जिज्ञासा को सन्तुष्टि मिली। सन् 2015 में मुझे पुनः मधुबन जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वास्तविक आनन्द की अनुभूति हुई। योग का वास्तविक अर्थ, जीने की पवित्र शैली का वास्तविक आभास हुआ। दादी जानकी के विचार प्रेरणादाई थे। दीदियों की मधुर वाणी ने जीने की कला का वास्तव में आभास कराया। मुझे आज भी उनके वक्तव्य की पक्तियाँ याद हैं, 'मैं अकेला हूँ, अकेला आया हूँ, अकेला जाऊँगा, अकेले में बैठ, अकेले को याद करना है।' वे हैं मेरे परमपिता शिव। उनकी इस अभिव्यक्ति ने मेरे जीवन के स्वरूप को ही बदल डाला। ❖

बाबा ने संवार दी जिन्दगी

ब्रह्माकुमार अमृतलाल शर्मा, टोंक (राज.)

जब मैं छह वर्ष का था तब मेरे पिता का देहांत हो गया। पिता के प्यार की बहुत ज्यादा कमी महसूस होती थी। गरीबी के कई ऐसे पल भी आए जिनमें सिर्फ पिता ही सहारा देकर उस पीड़ा से उबारकर आगे बढ़ा सकता है। जिसके सिर पर पिता का साया हो उसे ज्यादा चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं होती है।

तनाव पहुँचा चरम सीमा पर

मैंने स्थूल धन 10 वर्ष की उम्र में ही कमाना सीख लिया। कई प्रकार के कार्य करने पड़े, पढ़ाई भी साथ-साथ चलती रही। परिवार में तीन बहन-भाई, माताजी साथ में रहते थे। जाति से ब्राह्मण होने के कारण भिक्षावृत्ति का कार्य भी करना पड़ा। जब विद्यालय में मास्टर जी दोहा पढ़ाते थे – 'मांगन मरन समान है, मत मांगो कोई भीख, मांगन से मरना भला, यह सतगुरु की सीख' तो सुनकर जीवन से जैसे नफरत-सी होने लगती थी। परन्तु करता भी क्या, परिवार को सहयोग देकर गरीबी के दिन काटने की ज़िम्मेवारी का अहसास जो था। बारहवीं पास करते ही सेमकोर ग्लास लिमिटेड कम्पनी, कोटा (राज.) में प्रोडक्शन ऑपरेटर के पद पर 16 मई, 1993 को चुन लिया गया और सोचने लगा, अब गरीबी का पार्ट पूरा हुआ। लेकिन नहीं, तीन वर्ष बीतने पर कम्पनी लॉक आउट हो गई और 46 ऑपरेटर्स निकाल दिये गये जिनमें मेरा नाम भी शामिल था। दो साल तक इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा। अब मन में सिर्फ दो ही बातें थी, या तो मर जाऊँ या कम्पनी के अधिकारियों को मार दूँ। तनाव इस सीमा पर पहुँच चुका था कि कभी भी कुछ भी करने की स्थिति बन गई थी।

चिन्ता मत करो, मैं बैठा हूँ

रोजगार की तलाश में अचानक पुराने सहपाठी से भेंट हुई जो उन्हीं दिनों ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आया था। गुरुवार का दिन था, वह मुझे टोंक सेवाकेन्द्र पर ले गया। वहाँ की निमित्त बहन ने बड़े प्यार से सत्कार किया और चित्र प्रदर्शनी द्वारा ज्ञान समझाया। ब्रह्मा बाबा के चित्र को देखकर ऐसा आभास हुआ कि यही तो मेरे पिता हैं। मैं उनकी ओर बहुत देर तक देखता रहा और मन प्रफुल्लित हो उठा जैसे कि बहुत बड़ा खजाना मिल गया हो। ''बच्चे तुम चिन्ता मत करो, मैं बैठा हूँ'' यह मुझे उस दिन ही बाबा ने अनुभव करा दिया। बहन ने भोग (प्रसाद) दिया जो कि बड़ा ही मन को शान्ति देने वाला प्रतीत हुआ, जैसेकि तृप्ति आ गई। बस यहीं से नया जन्म हुआ अर्थात् दुखों का अन्त और सुखी जीवन की शुरूआत हो गई।

नियमित मुरली पढ़ने लगा

उन्हीं सहपाठी ने एक निजी विद्यालय खोला, मुझे उसमें 600 रुपये माह में नौकरी दी। एक साइकिल आने-जाने के लिए दी। सात कि.मी. साइकिल पर जाता और रास्ते में ही सेवाकेन्द्र पर नियमित मुरली पढ़ने का सिलसिला शुरू हो गया। पढ़ाई भी पुनः शुरू की। दो वर्ष पश्चात् बाबा ने एक निजी विद्यालय खोल दिया। पहले 600-1000 रुपये माह कमाता था। अब 5000 रुपये हर महीने बाबा ने देने शुरू कर दिये। साइकिल से मोपेड दिला दी। धीरे-धीरे एम.ए., बी.एड., एम.एड., पी.जी.डी.एल.एल. तक की शिक्षा बाबा ने दिला दी।

बाबा ने पूरा किया शुभ संकल्प

विद्यालय बढ़ाकर बाबा ने सेकेण्डरी स्तर का कर दिया। मोपेड से मोटर साइकिल और फिर चार पहिये का

(शेष..पृष्ठ 18 पर)

स्थायी सुख-शान्ति व प्रेम कैसे प्राप्त हो ?

प्रोफेसर अजीत सिंह राणा, रोहतक

सतोप्रधान व्यक्ति को ही सम्पूर्ण इन्सान कहा जा सकता है। सतोप्रधान व्यक्ति वह है जिसका जीवन ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द व शक्ति – इन सातों गुणों से भरपूर होता है। इनमें से सुख-शान्ति व प्रेम का होना जीवन की प्रगति के लिए अनिवार्य है। आज के मानव में इन तीनों गुणों का अभाव होने के कारण वह हिंसक, दुराचारी, चरित्रहीन और दुखी होने के साथ-साथ पिछड़ता भी जा रहा है। इसलिए सुख-शान्ति व प्रेम को पाने की उसकी प्यास व प्रयास तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। परन्तु बड़ी विडम्बना की बात है कि वह इनको पाने की बजाय इनसे दूर होता जा रहा है क्योंकि भ्रान्तिवश वह इन्हें वहाँ ढूंढ़ रहा है जहाँ ये हैं ही नहीं।

विकारी कर्मों से विकारी संस्कार

आज का मानव सुख-शान्ति व प्रेम को काम, क्रोध, लोभ आदि विकारजनित कर्मों में तलाश रहा है। श्रीमद्भगवद् गीता में वर्णन है कि काम महाशत्रु है, इसलिए काम विकार को जीतने की दलील दी गई है कि कामजीत ही जगतजीत बनते हैं। इस सम्बन्ध में ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान स्पष्ट करता है कि पवित्रता (जिसमें ब्रह्मचर्य मुख्य है) को धारण किये बिना किसी के भी जीवन में स्थाई सुख, शान्ति, समृद्धि व प्रेम आ नहीं सकते। काम विकार से हारने वाले व्यक्ति जगत से हारे हुए बनते हैं तथा वे सदा अप्रसन्न व दुखी रहते हैं। ऐसे व्यक्ति ही दुराचार, चरित्रहीनता व बलात्कार आदि करते हैं तथा सदा दुख, अशान्ति व नफरत के अधिकारी बनते हैं। क्रोधी व्यक्ति भी क्रोध की अग्नि में स्वयं तथा दूसरों को जलाता रहता है तथा सदा दुख, अशान्ति व नफरत का अधिकारी बनता है। लालच में फंस कर व्यक्ति भ्रष्ट कर्म करता है और दुख पाता है। ऐसे विकारी कर्म सदाकाल के लिए दुख, अशान्ति व घृणा के संस्कार रूपी बीज बोते हैं, आइये जानें, कैसे?

न चाहते भी पापकर्म करा लेते हैं संस्कार

हमारे द्वारा किये गये अच्छे या बुरे कर्म हमारी चेतना में छप जाते हैं जो बार-बार वैसा ही कर्म करने के लिए मन व बुद्धि पर दबाव बनाते रहते हैं। उन कर्मों को बार-बार करते रहने से वे पक्के संस्कार बनते जाते हैं जो जब-तब प्रकट होते हैं। कुछेक बुरे संस्कार इतने शक्तिशाली बन जाते हैं कि यदि कोई व्यक्ति उस भ्रष्ट कार्य को न करना चाहे तो भी संस्कारवश करने पर मजबूर हो जाता है। जैसे सम्पत्ति आदि पर झगड़े में पुत्र अपने पिता की हत्या कर देता है, फलस्वरूप जेल में सजा काटता है। तब किसी मौके पर वह कह उठता है कि मैं ऐसा करना तो नहीं चाहता था परन्तु ज्ञात नहीं, हो कैसे गया। यह क्रोध का प्रबल संस्कार था जिसने न चाहते हुए भी उससे पापकर्म करा लिया। हमारे विकारी संस्कार इतने शक्तिशाली होते हैं कि न चाहते भी हमसे गलत व दुखदाई कर्म करवाते रहते हैं तथा हमें कुकर्मों और कुसंस्कारों के दुश्चक्र में फंसाए रखते हैं।

समझदार व्यक्ति को चाहिए कि वह ऐसा रास्ता अपनाये जिससे उसके छिपे हुए कुसंस्कार बदल कर सुसंस्कार बन जाएँ तथा पापकर्म और बुरे संस्कारों के दुश्चक्र को तोड़ कर वह सदा के लिए सुख-शान्ति व प्रेम को प्राप्त कर सके। वह रास्ता क्या है?

पवित्रता के महान गुण को अपनाएँ

कर्म सिद्धांत के अनुसार जो हम दूसरों को देते हैं वह कभी न कभी लौटकर हमें प्राप्त होता है। गन्दी वस्तु या गन्दे व्यक्ति से कोई भी व्यक्ति दिल से प्रेम नहीं कर सकता। इसलिए उपरोक्त दुश्चक्र को तोड़ने तथा जीवन में स्थाई सुख, शान्ति व प्रेम को प्राप्त करने के लिए संकल्पों व कर्मों

में पवित्रता के महान गुण को अपनाना अनिवार्य है। इस सम्बन्ध में ब्रह्माकुमारीज़ का परमात्म ज्ञान कहता है कि पवित्रता ही सुख, शान्ति, समृद्धि व प्रेम की जननी है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि पवित्रता को कैसे ग्रहण करें? इस गुण को निम्न दो प्रकार से धारण किया जा सकता है –

1.यदि व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत नैतिक नीति बनाये कि चाहे कुछ भी हो उसे विचारों और कर्मों में पवित्रता को अपनाना ही है, बार-बार इसका अभ्यास करे, अपनी चेकिंग स्वयं करता रहे तो उसके जीवन में पवित्रता का आगमन हो सकता है। पवित्रता तथा अन्य किसी भी गुण को धारण करने के लिए अथक प्रयास जरूरी है। रूसो के अनुसार, ''गुणों को अपनाना युद्धरत रहने जैसा है। इन पर खरा उतरने के लिए खुद से लड़ना पड़ता है।''

2.व्यक्ति हर रोज़ मेडिटेशन (राजयोग) का अभ्यास करे। आस्तिक लोगों के लिए यह तरीका काफी सरल हो सकता है। परमात्मा या गॉड या खुदा ही पवित्रता के सागर हैं। सम्पर्क का नियम (Law of Contact) हमें सिखाता है कि हम जिसके सम्पर्क में आते हैं, उसका प्रभाव निश्चित रूप से हम पर पड़ता है। आग के सम्पर्क में आने से गर्मी तथा बर्फ के सम्पर्क में आने से हमें ठण्ड प्राप्त होती है। इसी प्रकार मेडिटेशन की प्रक्रिया में हम मन व बुद्धि को पवित्रता के सागर शिव परमात्मा से जोड़ कर, पवित्रता सम्बन्धी संकल्पों के मनन-चिंतन से, चेतना में पवित्रता के गुण को भर सकते हैं। इससे पवित्रता का गुण स्थाई रूप से चेतना में समाता तथा बढ़ता जाता है। कहावत भी है कि जैसा सोचोगे वैसा बनोगे। राजयोग द्वारा हम आत्मा के सातों मूल गुणों में स्थाई रूप से निरन्तर वृद्धि करते हुए आत्मा को सतोप्रधान बना सकते हैं। ❖

दृढ़ संकल्प के साथ किए गए राजयोग का कमाल

ब्रह्माकुमार विजय बंसल, पुंडरी

मैं पाँच साल से ईश्वरीय ज्ञान में चल रहा हूँ। कुछ समय पहले मेरे बेटे मृदुल को सांस की तकलीफ हुई। डॉक्टर को दिखाया तो उन्होंने ई.सी.जी.व अन्य टैस्ट किए और कहा, इसकी धड़कन बहुत ज्यादा है, इसके लिए ईको. का टैस्ट करवाएँगे, हमें इसके दिल में छेद की शंका है। घर आने पर मन में विचार आया, क्यों न सेवाकेन्द्र पर 21 दिन तक योग लगाया जाए। आश्रम जाकर हमने निमित्त बहन को सब बात बताई। उन्होंने कहा, 'भाई जी, आप सुप्रीम सर्जन से योग लगाइये, सब ठीक होगा।' अगले ही दिन हम योग करने आश्रम जाने लगे। मेरी युगल ने कहा, 'दवाई का काम तो दवाई ही करेगी, बाबा क्या करेगा।' बहन ने उन्हें समझाया, 'बहन जी, परिस्थिति आई है तो जाएगी ज़रूर' फिर जब योग में बैठे, मुझे अनुभव हुआ कि बाबा बच्चे का इलाज कर रहे हैं और मेरे नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी। एक दिन हम योग में कुछ समय लेट हो गए। निमित्त बहन ने कहा, 'भाई जी, ऐसे बात नहीं बनेगी। आप एक संकल्प, एक समय, एक स्थान लेकर चलो तो फिर बाबा का कमाल देखना।' फिर हम सही समय पर एक ही संकल्प से योग करते रहे। बाद में मृदुल को टैस्ट के लिए लेकर गए, टैस्ट की सभी रिपोर्ट्स नॉर्मल आईं। हमारी खुशी का ठिकाना न रहा। दिल से बार-बार यही निकला 'बाबा आपने कमाल कर दिखाया।' बाबा को कोटि-कोटि धन्यवाद। ❖

आत्म-स्वरूप की सतत स्मृति

ब्रह्माकुमार विपिन गुप्ता, टीकमगढ़ (म.प्र.)

पवित्रता श्रेष्ठतम मूल्य है। पवित्रता से ही कोई व्यक्ति विश्वसनीय, सुखदायी, सम्माननीय और निरापद बनता है। पवित्र आत्माएँ ही ईश्वरीय सेवा के निमित्त बन सकती हैं। अपवित्रता का प्रभाव लिए हुए कोई आत्मा यदि किसी को ईश्वरीय ज्ञान सुनाए तो वह उस में सत्य अनुभूति नहीं जगा सकती। अत: पवित्रता का ऊँचा स्तर ही ज्ञानी-योगी जीवन की सफलता का पैमाना है।

दैहिक आकर्षण – निकृष्टतम अशुद्धि

पवित्रता की महिमा का और अपवित्रता के कलंकों का पारावार नहीं। आध्यात्मिक जीवन में हमें जिस अपवित्रता को जड़ से समाप्त करना है, वह है दैहिक आकर्षण एवं दैहिक दृष्टि-वृत्ति की। सभी अशुद्धियों में यह निकृष्टतम अशुद्धि है। शिव बाबा ने इस विषय पर सर्वाधिक शिक्षा दे पुरुषार्थ कराया है। इसमें ज़रा भी ढील व लापरवाही की गुंजाइश नहीं दी क्योंकि यह अटल सत्य है कि श्राप जैसे इस विकार से मुक्त आत्मा ही ईश्वरीय ज्ञान एवं ईश्वरीय प्रेम की गहन अनुभूति का आनंद ले सकती है। बाबा ने अमोघ शिक्षा दी है कि हर आत्मा के प्रति भाई-भाई की दृष्टि रखने से हम देहभान से मुक्त होते जाते हैं परन्तु प्रश्न यह है कि आत्मा-आत्मा सुनते व बोलते भी हमारी आत्मअभिमानी स्थिति उतनी क्यों नहीं बनती जितनी कि बननी चाहिए। इसका कारण जान कर हमें निदान की युक्ति अपना लेनी है तब ही वास्तविक प्रगति संभव है।

उदाहरणार्थ देखने में आता है कि दो मित्रों की मित्रता की शुरूआत भले ही एक-दूसरे के नाम-रूप के परिचय से होती है पर वह मात्र नाम-रूप के परिचय से परवान नहीं चढ़ती बल्कि साथ रहते-रहते, मिलते-जुलते जब एक-दूसरे के श्रेष्ठ स्वभाव-संस्कार एवं मीठे व्यवहार की अनुभूति होती है तब दिल में स्नेह पैदा होता है। वर्षों बाद भी ऐसे व्यवहार की यादें मन में खुशी लाती हैं। इस खुशी में देह की आकृति का कोई विशेष महत्व नहीं होता है। इसी प्रकार अध्यात्म में भी अनुभव की यात्रा 'मैं आत्मा हूँ' इस सोच से ही शुरू होती है परंतु इस यात्रा को आगे बढ़ाने के लिए आत्मा के गुणों, शक्तियों की पूर्ण अनुभूति आवश्यक है।

मैं आत्मा हूँ – यह सोचना नहीं, हो जाना है

स्त्री-पुरुष के भेद का जो भान है, यही दैहिक आकर्षण एवं विकारों की उत्पत्ति का मूल कारण है। इसे आत्मिक भान में रहने के अभ्यास से मिटाया जा सकता है। यहाँ ध्यान देने योग्य विशेष बात यह है कि दैहिक आसक्ति के अनुभवों को तो मनुष्यों ने पूर्ण अनुभव सहित जाना व महसूस किया है परन्तु आत्मिक ज्ञान को मात्र व्याख्या के रूप में सुनकर ही पर्याप्त मान लिया जाता है और आत्मा के गुणों व आत्मस्थिति की मननयुक्त अनुभूति में कमी रह जाती है। आत्मा को तार्किक व्याख्या से तो जान लेते हैं पर अनुभव में कमी रह जाती है। जैसे दुर्गंधयुक्त हवा को शुद्ध अथवा सुगंधित हवा द्वारा ही हटाया जा सकता है, उसी प्रकार रूहानी (आत्मिक) अनुभूति में जीकर ही दैहिक अनुभव को मिटाया जा सकता है मात्र शब्दों की बौछार से नहीं अर्थात् मैं आत्मा हूँ, यह सोचना नहीं वरन् मैं आत्मा हूँ – यह हो जाना है।

आत्मिक भान को बढ़ाने की एक विधि है कि हर भाई, हर बहन को शरीर रूपी आवरण में छिपा पुरुष (आत्मा) माने और बहनें भी स्वयं को शरीर रूपी प्रकृति का मालिक (पुरुष) मानें। आत्मा ही वास्तविक पुरुष है। पुरुष अर्थात् जो पुरुषार्थ (परिश्रम) की शक्ति रखता है, कर्मठ एवं दृढ़ होता है। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1. **सोनीपत-** दादी जानकी के 100वें जन्म दिवस समारोह में केक काटते हुए राजयोगिनी दादी जानकी, ब्र.कु.अमीरचन्द भाई, हरियाणा पुलिस महानिरीक्षक बहन सुमन मन्जरी, हरियाणा की महिला तथा बाल कल्याण मन्त्री बहन कविता तथा अन्य। **2. निरसा-** झारखण्ड के मुख्यमंत्री भ्राता रघुवर दास को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.जया बहन तथा डॉ.अवन्तिका बहन। **3.दिल्ली (राजौरी गार्डन)-** 'हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस' उत्सव का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी। साथ में राजयोगिनी दादी रुक्मिणि, ब्र.कु.सुदेश बहन, ब्र.कु.शक्ति बहन तथा अन्य। **4.विजयवाड़ा-** आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता चंद्रबाबू नायडू को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मृत्युंजय भाई। **5.कोचीन-** 'मूल्य तथा आध्यात्मिकता' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री शंकराचार्य संस्कृत यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति डॉ.एम.सी.दिलीपकुमार, एन.पी.ओ.एल.के निदेशक डॉ.अनन्त नारायण, प्राचार्य डॉ.सोमशेखरन नायर, ब्र.कु.डॉ.सीमा बहन, ब्र.कु.राधा बहन। **6.पटनासिटी -** बिहार विधान सभा के प्रतिपक्ष के नेता भ्राता नंद किशोर यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रानी बहन। **7.वियतनाम (हो ची मिन्ह सिटी)-** 'व्यक्तित्व विकास के लिए राजयोग' विषयक कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई तथा अन्य। **8.टेक्सास-** जर्नलिस्ट तथा केरा टी.वी.चेनल पर सी.ई.ओ.टेलिविजन सीरीज की होस्ट बहन ली कुल्लुम के साथ ब्र.कु.रंजन बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : December, 2015.

नई दिल्ली-
जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित 'विश्व शान्ति के लिए राजयोग' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, दिल्ली के मुख्यमंत्री भ्राता अरविन्द केजरीवाल, ब्र.कु.जयन्ती बहन तथा ब्र.कु.बृजमोहन भाई तथा अन्य।

नई दिल्ली- पार्लियामेन्ट हाउस ऐनेक्सी में संयुक्त राष्ट्र की 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित 'आंतरिक शक्तियों का विकास' विषयक कार्यक्रम में संबोधित करते हुए भारत-भूटान में संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र की निर्देशिका बहन किरण मेहरा। मंचासीन है राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, राजयोगिनी दादी जानकी, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.जयंती बहन तथा राज्यसभा के उपाध्यक्ष पी.जे.कुरियन।

काठमाण्डू-
नेपाल की प्रथम महिला राष्ट्रपति बहन विद्या भण्डारी को बधाई एवं ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.राज बहन।

रायपुर-
छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम भ्राता बलराम दास टण्डन को भाई दूज के अवसर पर आत्म-स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.कमला बहन। साथ में ब्र.कु.सविता बहन।